www.ghoonghatkibagawat.com ghoonghatkibagawat37@gmail.com ghoonghatkibagawat.com

UP/HIN/1999/1282

घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी (साप्ताहिक समाचार पत्र)

वर्ष : 23 | अंक : 05 | गोरखपुर | 30 जुलाई 2023 | पृष्ठ : 8 | मूल्यः 2/–

'मेरी माटी, मेरा देश' कार्यक्रम के तहत योगी सरकार स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) को पंचायत व स्थानीय निकाय स्तर पर विविध आयोजन कराएगी। शहीदों के परिजनों का सम्मान कर जहां उनकी वीर गाथा से युवा फिर अवगत होंगे, वहीं वृक्षारोपण अभियान–2023 के तहत सभी ग्राम पंचायतों में एक स्थान चिह्नित कर 75 पौधरोपण कर अमृत वाटिका विकसित की जाएगी।

स्वतंत्रता दिवस पर वीरों का सम्मान करेगी योगी सरकार

लखनऊ। यूपी की माटी से निकले वीरों का वंदन कर योगी सरकार युवाओं को महापुरुषों की वीरता का दीदार कराएगी। 'मेरी माटी, मेरा देश' कार्यक्रम के तहत योगी सरकार स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) को पंचायत व स्थानीय निकाय स्तर पर विविध आयोजन कराएगी। शहीदों के परिजनों का सम्मान कर जहां उनकी वीर गाथा से युवा फिर अवगत होंगे, वहीं वृक्षारोपण अभियान–2023 के तहत सभी ग्राम पंचायतों में एक स्थान चिह्नित कर 75 पौधरोपण कर अमृत वाटिका विकसित की जाएगी। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के तहत योगी सरकार इस आयोजन को अद्वितीय व अविस्मरणीय बनाएगी। योगी सरकार ने वृक्षारोपण अभियान–2023 के तहत 22 जुलाई व 15 अगस्त को कुल 35 करोड़ से अधिक पौधरोपण करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसमें से 22 जुलाई को 30 करोड़ से अधिक पौधे लगाकर योगी सरकार ने इतिहास बनाया। अब 15 अगस्त को भी वसुधा वंदन के तहत सभी 57702 ग्राम पंचायतों में एक स्थान चिह्नित कर स्वदेशी प्रजाति के 75 पौधों का रोपण कर अमृत वाटिका विकसित की जाएगी। देश व प्रदेश के सभी हिस्सों से एकत्र की गई मिट्टी को अमृत वाटिका विकसित करने के लिए उपयोग किया जाएगा।

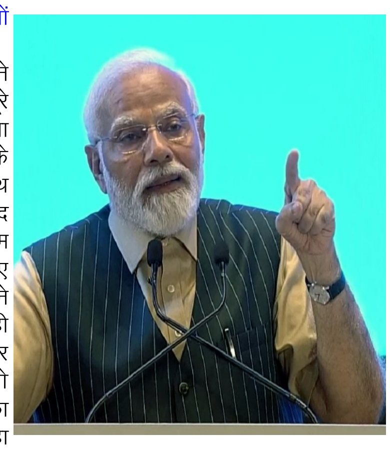
15 अगस्त को ही योगी सरकार स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, थल सेना, वायु सेना, केंद्रीय पुलिस बल व राज्य पुलिस के शहीदों के परिजनों का सम्मान भी करेगी। साथ ही कार्यक्रम स्थल पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर राष्ट्रगान भी कराया जाएगा। राष्ट्रधुन का वादन पुलिस–पीएसी–विद्यालयों के बैंड व अन्य स्थानीय बैंड के जरिए होगा। इसका उद्देश्य है कि वर्तमान व भावी पीढ़ी अपने आसपास, शहर, प्रदेश व देश के वीर जवानों की गाथाओं से परिचित हो। इसके साथ ही 15 अगस्त को समस्त 57702 ग्राम पंचायतों व 493 नगर पंचायतों में माटी कलश तैयार करने की योजना है। स्वतंत्रता दिवस पर स्थानीय कलाकारों की ओर से राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे।

ग्राम विकास अधिकारी, पंचायत सचिव व लेखपाल होंगे समन्वयक

पंचायत व स्थानीय निकाय स्तर पर इस आयोजन के लिए खंड विकास अधिकारी व अधिशासी अधिकारी द्वारा मनोनीत किए गए ग्राम विकास अधिकारी–पंचायत सचिव–लेखपाल व सफाई निरीक्षक इन कार्यक्रमों के समन्वयक होंगे। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान, ग्राम स्तरीय कर्मचारी, कोटेदार की उपस्थिति अनिवार्य रूप से होगी। साथ ही ग्राम पंचायत व ग्राम सभी के सदस्यों से भी उपस्थित रहने का निवेदन किया गया है। सरकार की मंशा है कि स्वतंत्रता दिवस पर होने वाले आयोजनों में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के आश्रितों, पुलिस व सेना के शहीदों के परिजनों व अन्य विशिष्ट जनों की उपस्थिति इस कार्यक्रम में रहे। कार्यक्रम में समाज के अन्य लोगों के साथ स्वयं सहायता समूह, आंगनबाड़ी, आशा बहुएं, स्वच्छाग्राही, ग्राम सेवक, रोजगार सेवक, जिलेदार, ट्यूबवेल ऑपरेटर आदि का भी सहयोग लिया जाएगा।

भारत को नयी संभावनाओं की 'नर्सरी' के रूप में देख रही दुनिया': मोदी

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य युवाओं को समान अवसर प्रदान करना



नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के तीन साल पूरे होने के अवसर पर अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन का उद्घाटन प्रगति मैदान के भारत मंडपम में किया। नरेंद्र मोदी के साथ केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान भी मौजूद रहे। इस दौरान नरेंद्र मोदी ने 'पीएम श्री योजना' के तहत स्कूलों के लिए धनराशि की पहली किस्त जारी की। अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि शिक्षा ही है जो देश का भाग्य बदलने की ताकत रखती है। देश जिस लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहा है उसमें शिक्षा की अहम भूमिका है। आप इसके प्रतिनिधि हैं। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय शिक्षा समागम का हिस्सा बनना मेरे लिए भी एक महत्वपूर्ण अवसर है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पारंपरिक ज्ञान प्रणाली

मोदी ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने पारंपरिक ज्ञान प्रणाली से लेकर भविष्य की तकनीक तक को संतुलित तरीके से महत्व दिया है। उन्होंने कहा कि रिसर्च इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए देश के शिक्षा जगत के सभी महानुभावों ने बहुत मेहनत की है। हमारे छात्र नई व्यवस्थाओं से भली–भांति परिचित हैं, वे जानते हैं कि 10+2 शिक्षा प्रणाली की जगह अब 5+3+3 +4 लाई जा रही है। उन्होंने कहा कि काशी के रुद्राक्ष से लेकर आधुनिक भारत के इस मंडप तक अखिल भारतीय शिक्षा समागम की यात्रा अपने आप में एक संदेश समेटे हुए है। यह प्राचीनता और आधुनिकता का संगम है। उन्होंने कहा कि हमारी शिक्षा प्रणाली भारत की परंपराओं को संरक्षित कर रही है, वहीं देश आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भी आगे बढ़ रहा है। मोदी ने कहा कि दुनिया भारत को नयी संभावनाओं की 'नर्सरी' के रूप में देख रही है, कई देश अपने यहां आईआईटी परिसर खोलने के लिए हमसे संपर्क कर रहे हैं।

मूल भाषा पर देना होगा जोर

अपने भाषण में मोदी ने कहा कि युवाओं को उनकी प्रतिभा के बजाय उनकी भाषा के आधार पर आंकना उनके साथ सबसे बड़ा अन्याय है। उन्होंने कहा कि दुनिया में अलग–अलग भाषाएं हैं और सभी का अपना–अपना महत्व है। अधिकांश विकसित देश इसी आधार पर आगे बढ़े हैं उनकी मूल भाषा के आधार पर। इतनी सारी मूल भाषाएँ होने के बावजूद हमने उन्हें पिछड़े के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्राथमिकता है कि भारत के हर युवा को समान शिक्षा मिले, शिक्षा के समान अवसर मिले। समान शिक्षा का मतलब है –शिक्षा के साथ–साथ संसाधनों तक समान पहुंच। – हर बच्चे की समझ और चॉइस के हिसाब से उसे विकल्पों का मिलना। – स्थान, वर्ग, क्षेत्र के कारण बच्चे शिक्षा से वंचित न रहें। इसलिए छम्न्च का विजन और देश का प्रयास ये है कि गावं, शहर, अमीर, गरीब हर वर्ग के युवाओं को एक जैसा अवसर मिले।

नई पीढ़ी का निर्माण करना होगा

मोदी ने कहा कि इस 'आजादी का अमृत महोत्सव' में अगले 25 साल बहुत महत्व रखते हैं। इन आगामी वर्षों के दौरान, हमें ऊर्जा और जोश से भरी युवाओं की एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करना होगा, एक ऐसी पीढ़ी जो दासता के मनो. विज्ञान से मुक्त हो, एक ऐसी पीढ़ी जो नए से नए आविष्कारों के लिए उत्सुक हो, एक ऐसी पीढ़ी हो जो हर क्षेत्र में भारत को गौरवान्वित करे। उन्होंने कहा कि विज्ञान से लेकर खेल तक, एक ऐसी पीढ़ी जिसमें 21वीं सदी के भारत की आवश्यकताओं को समझने की क्षमता हो और जिसमें कर्तव्य और जिम्मेदारी का पूरा एहसास हो। इसमें हमारी नई शिक्षा नीति की बहुत बड़ी भूमिका है। गौरतलब है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दुनिया में कई पैमाने हैं, लेकिन भारत के संदर्भ में हमारा सबसे बड़ा पैरामीटर समानता है।

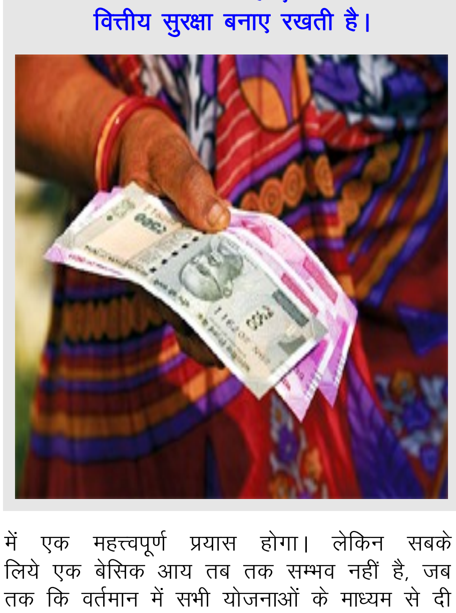
क्या भ्रष्टाचार से निपटने में कारगर होगी बेसिक आय?

बेसिक आय किसी देश के सभी नागरिकों को उनकी आय, संसाधनों या रोजगार की स्थिति की परवाह किए बिना एक निश्चित धनराशि प्रदान करने का एक मॉडल है। बेसिक आय का उद्देश्य गरीबी को रोकना या कम करना और नागरिकों के बीच समानता बढ़ाना है। आज बेसिक आय की अवधारण को लेकर भिन्न–भिन्न मत दिये जा रहे हैं ऐसे में यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि भारत में यह कितनी व्यावहारिक होगी। लेकिन पहले यह देख लेते हैं कि इस पायलट स्कीम पर कार्य करते हुए मध्य प्रदेश में लोगों के जन–जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा? क्या भारत में आय असमानता की चौड़ी होती जा रही खाई को पाट दिया गया है? क्या सबके लिये पीने का स्वच्छ पानी, रहने को घर और खाने को भोजन मिल रहा है? क्या अमीर व गरीब सबके बच्चे एक मानक शिक्षा व्यवस्था का हिस्सा हैं? यदि इन सभी सवालों का जवाब 'नहीं' है तो क्यों न तमाम सामाजिक, आर्थिक मानकों का अध्ययन करते हुए सबके लिये एक 'बेसिक आय' की व्यवस्था कर दी जाए।

सभी व्यक्ति लाभार्थी होंगे, इसके माध्यम से गाँवों में लोगों के रहन–सहन के स्तर को सुधारा जा सकता है, उन्हें पेयजल उपलब्ध कराया जा सकता है और बच्चों के पोषण में सुधार भी लाया जा सकती हैद्य एक नियमित बेसिक आय के भुगतान द्वारा भूख और बीमारी से विवेकपूर्ण ढंग से निपटने में मदद मिल सकती है। बेसिक आय, बाल श्रम को कम करने में भी मददगार साबित हो सकता है। इसके ज़रिये उत्पादक कार्यों में वृद्धि करके गाँवों की तस्वीर बदली जा सकती है और यह सतत विकास की दिशा में एक उल्लेखनीय प्रयास होगाद्य विदित हो कि बेसिक आय की मदद से सामाजिक विषमता को भी कम किया जा सकता है। यदि एक वाक्य में कहें तो बेसिक आय का यह विचार आय असमानता और इसके दुष्प्रभावों के श्राप से भारत को मुक्त कर सकता।

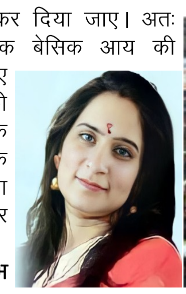
वर्तमान में, 1000 से अधिक केंद्र और राज्य सरकार की योजनाएं मौजूद हैं, जिनमें से अधिकांश भ्रष्टाचार से भरी हुई हैं। वर्तमान योजनाओं में लीकेज का स्तर अत्यधिक उच्च है और ऐसी योजनाओं का कार्यान्वयन भी ख़राब है। बेसिक आय इस ढेर सारे कार्यक्रमों की जगह ले सकता है, जिससे इससे जुड़ी भ्रष्टता दूर हो सकती है। बेसिक आय सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े नागरिकों की गरीबी और असुरक्षा को दूर करने में मदद करेगा। (जन–धन, आधार और मोबाइल) बुनियादी फ्रेमवर्क, बेसिक आय के कार्यान्वयन को पूरक बना सकता है और अधिक दक्षता और पारदर्शिता ला सकता है। कम वेतन वाले, कम–कुशल काम करने वालों के लिए आज के श्रम बाजार की बढ़ती अनिश्चित प्रकृति में, मजदूरी संबंधी असमानता बढ़ रही है। अतः बेसिक आय उन श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए कदम उठाता है। सामान्य तौर पर, बेसिक आय स्वास्थ्य, आय और अन्य झटकों के विरुद्ध सुरक्षा जाल के रूप में कार्य करेगा।

वर्तमान में, एक हजार से अधिक केंद्र और राज्य सरकार की योजनाएं मौजूद हैं, जिनमें से अधिकांश भ्रष्टाचार से भरी हुई हैं। वत. 'मान योजनाओं में लीकेज का स्तर अत्यधिक उच्च है और ऐसी योजनाओं का कार्यान्वयन भी ख़राब है। बेसिक आय इस ढेर सारे कार्यक्रमों की जगह ले सकता है, जिससे इससे जुड़ी भ्रष्टता दूर हो सकती है। बेसिक आय सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े नागरिकों की गरीबी और असुरक्षा को दूर करने में मदद करेगा। यह एक गारंटीकृत आय है, जो विषम परिस्थितियों में जीवित रहने के लिए एक आधार के रूप में कार्य करती है एवं आर्थिक और वित्तीय सुरक्षा बनाए रखती है।



भारत एक विकासशील देश है, जबकि सभी व्यक्तियों के लिये एक निश्चित आय का बोझ कोई बहुत विकसित अर्थव्यवस्था ही उठा सकती है। हम तो बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं और आधारभूत ढाँचे का बोझ ही बहुत मुश्किल से उठा पा रहे हैं। ऐसे में बेसिक आय की राह में सबसे बड़ी चुनौती यह है कि 'बेसिक आय' का स्तर क्या हो, यानि वह कौन सी राशि होगी जो व्यक्ति की अपनी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा कर सके? यूनिवर्सल बेसिक इनकम के साथ प्रमुख चिंता इसके राजकोषीय निहितार्थ हैं। बेसिक आय योजना को वित्तपोषित करने के लिए बड़ी मात्रा में राजस्व उत्पन्न करना होगा, जिससे करदाताओं पर काफी बोझ पड़ेगा। इस बात की गंभीर चिंता है कि बेसिक आय श्रम बाजारों को विकृत कर देगा, क्योंकि श्रमिकों को नियमित रूप से प्राप्त होने वाली आसान आय, उन्हें काम करने से हतोत्साहित करेगी। इस नकद हस्तांतरण से श्रम आपूर्ति की मात्रा में कमी आएगी, क्योंकि श्रमिक घरेलू आय को प्रभावित किए बिना अपनी नौकरी छोड़ने का विकल्प चुन सकते हैं। यह भी डर है कि चुनाव जीतने के लिए राजनीतिक वर्ग द्वारा इस योजना का दुरुपयोग किया जा सकता है। ऐसा हो सकता है कि सत्तारूढ़ दल मतदाताओं को खुश करने के लिए बेसिक आय के तहत मूल आय बढ़ा दे, ताकि वह चुनाव जीत सके। इससे सरकारी खजाने पर भारी वित्तीय बोझ पड़ेगा और इसलिए योजना का मूल उद्देश्य विफल हो जाएगा।

बेसिक आय को लगभग 78þ आबादी को भी लाभ प्रदान करने की आवश्यकता होगी, जो गरीबी वर्ग में नहीं आते हैं। यदि हम अवधारणा की शुद्धता का पालन करते हैं और इसे सार्वभौमिक बनाते हैं, तो भारतीय संदर्भ में प्रत्येक व्यक्ति को मिलने वाली राशि कम होने का बड़ा जोखिम है। इससे कई समूहों का विरोध हो सकता है और गरीबों के लिए समानता और राज्य कल्याण के संबंध में सवाल खड़े हो सकते हैं। इस प्रकार की नीति के सफल होने के लिए जनता का समर्थन और सहमति अत्यंत आवश्यक होता है। बेसिक आय का विचार भारत को अपनी जनता के स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य नागरिक सुविधाओं में सुधार के साथ उनके जीवन–स्तर को ऊपर उठाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास होगा। लेकिन सबके लिये एक बेसिक आय तब तक सम्भव नहीं है, जब तक कि वर्तमान में सभी योजनाओं के माध्यम से दी जा रही सब्सिडी को खत्म न कर दिया जाए। अतः सभी भारतवासियों के लिये एक बेसिक आय की व्यवस्था करने के बजाए सामाजिक–आर्थिक जनगणना की मदद से समाज के सर्वाधिक वंचित तबके के लिये एक निश्चित आय की व्यवस्था करना कहीं ज़्यादा प्रभावी और व्यावहारिक होगा।



–प्रियंका सौरभ

मुख्य न्यायाधीश की टिप्पणी पर लेखक बद्री शेषाद्री को तमिलनाडु पुलिस ने किया गिरफ्तार



चेन्नै। तमिलनाडु पुलिस ने शनिवार को राजनीतिक विश्लेषक और लेखक बद्री शेषाद्री को यूट्यूब पर एक साक्षात्कार के दौरान मणिपुर हिंसा और भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) डीवाई चंद्रचूड़ पर उनकी कथित 'भड़काऊ' टिप्पणी के लिए गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक शेषाद्रि को धारा 153, 153ए और 505(1)(बी) के तहत गिरफ्तार किया गया है। इंटरव्यू में शेषाद्रि ने कहा, "सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि अगर आप (सरकार) कुछ नहीं कर सकते, तो हम (कोर्ट) करेंगे। आइए चंद्रचूड़ को बंदूक दें और उन्हें वहां भेजें। देखते हैं कि क्या वह शांति बहाल कर सकते हैं।" आगे शेषाद्रि ने कहा था, "यह एक पहाड़ी और जटिल क्षेत्र है और वहां हत्याएं होंगी। हम हिंसा होने से नहीं रोक सकते।" इंडिया टुडे द्वारा प्राप्त प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) के विवरण में कहा गया है कि शेषाद्रि के खिलाफ शिकायत वकील कवियारासु द्वारा दायर की गई थी। शिकायत में वकील ने कहा कि उन्होंने 22 जुलाई को यूट्यूब इंटरव्यू क्लिप देखी, जिसमें शेषाद्रि ने सुप्रीम कोर्ट और सीजेआई चंद्रचूड़ की आलोचना की थी। इस बीच, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष अन्नामलाई ने शेषाद्रि की गिरफ्तारी की निंदा की और कहा कि द्रमुक सरकार केवल गिरफ्तारी पर भरोसा कर रही है। अन्नामलाई ने ट्वीट किया "तमिलनाडु भाजपा गत दिवस सुबह तमिलनाडु पुलिस द्वारा प्रसिद्ध प्रकाशक और मंच वक्ता बद्री शेषाद्रि की गिरफ्तारी की कड़ी निंदा करती है। यह भ्रष्ट द्रमुक सरकार आम लोगों के विचारों को संबो. धित करने की शक्ति के बिना केवल गिरफ्तारी पर भरोसा कर रही है। क्या तमिलनाडु पुलिस की है?" काम केवल भ्रष्ट द्रमुक सरकार के बदले के कदमों को लागू करना है?''

मुहर्रम का निकला जुलूस



उडुपी रामचंद्र राव एक भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिक और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष थे। वह अहमदाबाद में भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला के गवर्निंग काउंसिल के अध्यक्ष और बेंगलुरु में नेहरू तारामंडल और तिरुवनंतपुरम में भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान के चांसलर भी थे।

उडुपी रामचंद्र राव का जन्म कर्नाटक राज्य के अडामारू में हुआ था। एक ब्राह्मण समाज में उनके माता–पिता लक्ष्मीनारायण आचार्य और कृष्णवेनी अम्मा थे। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा अडामारू में की थी। उन्होंने अपनी माध्यमिक शिक्षा क्रिश्चियन हाई स्कूल, उडुपी से पूरी की। उन्होंने अपना बी.एससी गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज,अनंतपुर से पूरा किया, डॅ.ब. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और पीएच.डी. डॉ. विक्रम साराभाई के मार्गदर्शन में भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद में पूरी की। राव ने अपने कैरियर की शुरुआत एक लौकिक किरण वैज्ञानिक के रूप में की, और डॉ. विक्रम साराभाई के अधीन काम किया, जिसे उन्होंने डप्ज में जारी रखा। जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी समूह के सहयोग से, वह सौर हवा की निरंतर प्रकृति और मारिनर 2 टिप्पणियों का उपयोग करके भू–चुंबकत्व पर इसके प्रभाव को स्थापित करने वाले पहले व्यक्ति थे। कई पायनियर और एक्सप्लोरर अंतरिक्ष यान पर राव के प्रयोगों से सौर ब्रह्मांडीय किरण की घटनाओं और इंटर प्लेनेटरी स्पेस की विद्युत चुम्बकीय स्थिति की पूरी समझ पैदा हुई। तेजी से विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की अनिवार्यता के कारण, राव ने 1972 में भारत में उपग्रह प्रौद्योगिकी की स्थापना के लिए जिम्मेदारी निभाई। उनके मार्गदर्शन में, 1975 में पहले भारतीय उपग्रह "आर्यभट्ट" से शुरू होकर, 18 से अधिक उपग्रह जिनमें भास्कर, से लगायत रिमोट सेंसिंग उपग्रह थे। संचार, रिमोट सेंसिंग और मौसम संबंधी सेवाएं प्रदान करने के लिए डिज़ाइन, निर्माण और लॉन्च किया गया। प्रो यू. आर. राव, एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक थे जिन्होंने भारत में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के विकास और इसके व्यापक अनुप्रयोग संचार और प्राकृतिक संसाधनों की सुदूर संवेदन के लिए मूल योगदान दिया।

वह अहमदाबाद में भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला के गवर्निंग काउंसिल के अध्यक्ष और तिरुवनंतपुरम में भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान के चांसलर थे। डलास में टेक्सास विश्वविद्यालय में एमआईटी और सहायक प्रोफेसर के रूप में संकाय



प्रोफ़ेसर राव को 1976 में भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण और 2017 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। उन्हें सोसाइटी ऑफ सैटेलाइट प्रोफेशनल इंटरनेशनल द्वारा आयोजित एक समारोह में 19 मार्च 2013 को वाशिंगटन के "सैटेलाइट हॉल ऑफ फेम" में शामिल किया गया था। इसके साथ वह शामिल होने वाले पहले भारतीय बन गए। उन्हें 15 मई 2016 को अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष यात्री महासंघ में भी शामिल किया जाना था। वह इस तरह का उपलब्धि हासिल करने वाले पहले भारतीय भी थे।

सदस्य के रूप में काम करने के बाद, जहां उन्होंने पायनियर और एक्सप्लोरर स्पेसक्राफ्ट के एक प्रमुख प्रयोगकर्ता के रूप में जांच की और प्रो. राव भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला में प्रोफेसर के रूप में 1966 में भारत लौट आए। प्रो. राव ने ब्रह्मांडीय किरणों, अं. तर्वैयक्तिक भौतिकी, उच्च ऊर्जा खगोल विज्ञान, अंतरिक्ष अनुप्रयोगों और उपग्रह और रॉकेट प्रौद्योगिकी को कवर करते हुए 350 से अधिक वैज्ञानिक और तकनीकी पत्र प्रकाशित किए थे और कई किताबें लिखी थीं। वह D.Sc. यूरोप के सबसे पुराने विश्वविद्यालय, बोलोग्ना विश्वविद्यालय सहित 25 से अधिक विश्वविद्यालयों से डिग्री हासिल कर चुके है।

इसरो के अध्यक्ष के रूप में 1985 में अंतरिक्ष विभाग के अध्यक्ष, अंतरिक्ष आयोग और सचिव के रूप में कार्यभार संभालने के बाद, राव ने रॉकेट प्रौद्योगिकी के विकास में तेजी लाई, जिसके परिणामस्वरूप 1992 में एएसएलवी रॉकेट का सफल प्रक्षेपण हुआ। वह परिचालन पीएसएलवी प्रक्षेपण यान के विकास के लिए भी जिम्मेदार थे, जो सफलतापूर्वक 850 किग्रा का शुभारंभ किया। वह इसरो में अपने कार्यकाल के दौरान INSAT उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण के लिए जिम्मेदार थे। इन्सैट उपग्रहों के प्रक्षेपण ने 1980 और 1990 के दशक के दौरान भारत में संचार को जोर दिया। इन्सैट के सफल प्रक्षेपण ने भारत के दूरदराज के कोनों को दूरसंचार लिंक प्रदान किए। इन दशकों के दौरान जमीन में विभिन्न स्थानों पर उपग्रह लिंक की उपलब्धता के कारण पूरे देश में निश्चित टेलीफोन (जिसे लैंडलाइन कहा जाता है) का विस्तार हुआ। लोग कनेक्शन पाने के लिए घंटों इंतजार करने के बजाय एसटीडी (सब्सक्राइबर ट्रंक डायलिंग) के इस्तेमाल से कहीं से भी आसानी से बात कर सकते थे। इस विकास ने भविष्य में भारत के लिए सूचना प्रौद्योगिकी हब के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह एंट्रिक्स कॉर्पोरेशन के पहले अध्यक्ष थे। श्री राव का निधन 24 जुलाई 2017 को हृदयाघात के पश्चात लंबी बीमारी के कारण हो गया।





प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बृहस्पतिवार को गुजरात में राजकोट शहर के निकट एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का उद्घाटन किया। जानकारों के अनुसार, यह राज्य का पहला ग्रीनफील्ड हवाई अड्डा है और इसे 1,405 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है। इसमें कहा गया कि राजकोट से लगभग 30 किलोमीटर दूर हीरासर गांव में स्थित हवाई अड्डा परिसर 1,025.50 हेक्टेयर (2, 534 एकड़) क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें से भारतीय हवाई अड्डा प्राधिकरण ने 1,500 एकड़ क्षेत्र में हवाई अड्डे का निर्माण किया है।

सिद्धारमैया को हाईकोर्ट ने जारी किया नोटिस,



विधायकी रद्द करने की मांग वाली याचिका पर हुई सुनवाई



बेंगलुरू। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के खिलाफ कर्नाटक उच्च न्यायालय में एक व्यक्ति ने याचिका दर्ज की थी जिसमें कहा गया था कि उनको वरुणा विधानसभा क्षेत्र से अयोग्य ठहराया जाए। वहीं अब इस याचिका को लेकर कर्नाटक हाईकोर्ट ने मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को नोटिस जारी किया है। नोटिस का जवाब एक सितंबर तक दिया सकता है। न्यायमूर्ति सुनील दत्त यादव ने आदेश दिया और सुनवाई स्थगित कर दी। मतदाताओं को लुभाने के लिए मुफ्त सुविधाओं का वादा किया था। याचिका में आरोप लगाया गया कि सिद्धारमैया ने संविधान के प्रावधानों और जन प्रतिनिधित्व अधिनियम के तहत नियमों और दिशानिर्देशों का उल्लंघन किया है। वरुणा विधानसभा सीट के रहने वाले केएम शंकर ने शुक्रवार को आरोप लगाते हए कहा कि कांग्रेस ने मतदाताओं को लुभाने के लिए मुफ्त सुविधाओं का वादा किया था।

जनप्रतिनिधित्व अधिनियम का उल्लंघन

व्यक्ति ने कहा कि पांच गारंटी योजनाओं की वजह से कांग्रेस को बहुमत मिलने मदद हुई। सिद्धारमैया और डीके शिवकुमार ने गारंटी कार्ड का वितरण किया, जिससे मतदाता आकर्षित हुआ। कांग्रेस का कहना था कि अगर सरकार बनती है तो इन गारंटियों को पूरा किया जाएगा। जनप्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 123 (1) के तहत युवक ने सिद्धारमैया को याचिका में चुनौती दी है। अधिनियम लालच देने पर रोक लगाता है। याचिका में आरोप है कि कांग्रेस पार्टी ने गारंटी कार्ड बांटकर मतदाताओं को लुभाया है।

मुख्यमंत्री का जनता दरबारः



कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने गत दिनों जनता दरबार के माध्यम से जन समस्याओं को लिया संज्ञान।

आज भी कुतूहल का विषय है चपाती आन्दोलन





आंदोलन का एकमात्र सबूत, वो ख़त!

भारतीय इतिहासकारों द्वारा '1857 की क्रांति' का एक व्यापक चित्रण किया था, लेकिन इतिहासकारों ने इस दौरान हुए 'चपाती आंदोलन' को तवज्जो नहीं दी। चपाती शब्द से ही आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि स्वाधीनता के लिए हमारे लोगों ने क्या–क्या नहीं सहा था। दरअसल, इस आंदोलन का ज़िक्र पहली बार मार्च 1857 में 'ईस्ट इंडिया कंपनी' के सैन्य सर्जन डॉ. गिल्बर्ट हैडो ने किया था। उन्होंने भारत से ब्रिटेन अपनी बहन को एक ख़त लिखा, जिसमें उन्होंने 'चपाती आंदोलन' का ज़िक्र किया था। भारतीय इतिहास में यही ख़त 'चपाती आंदोलन' का एकमात्र सबूत है कि भारत में ऐसा भी कोई आंदोलन हुआ था।

हैडो के ख़त से जाहिर है कि ये कोई छोटी–मोटी घटना नहीं थी, बल्कि एक ऐसा आंदोलन था जिसने ब्रिटिश हुकूमत की नींद हराम कर दी थी। तभी तो हैडो ने इसे ज़रूरी समझा और इतना ज़रूरी कि अपनी बहन को ख़त लिखकर ख़बर दी।

गिल्बर्ट ने अपने ख़त में लिखा कि, वर्तमान में पूरे भारत में एक रहस्यमय आंदोलन चल रहा है। वो क्या है इसके बारे में कोई नहीं जानता? उसके पीछे की वजहों को आज तक तलाशा नहीं गया है? ये कोई धार्मिक आंदोलन है या कोई गुप्त षड्यंत्र? इसके बारे में कोई कुछ नहीं जानता. कुछ पता है तो बस ये कि इसे 'चपाती आंदोलन' कहा जा रहा है'।

90 हजार पुलिसकर्मी हुए आंदोलन में शामिल

इस आंदोलन के बारे में ये भी कहा जाता है कि इस पर पहली नज़र मथुरा के मजिस्ट्रेट मार्क थॉर्नहिल की पड़ी थी। जब एक रोज़ वो अपने घर से थाने पहुंचे तो उन्होंने अपनी टेबिल पर चपातियों से भरा एक बोरा देखा। इस पर उन्होंने जब एक भारतीय सिपाही से पूछा तो उसने बताया कि रात में कोई चपातियों से भरा ये बोरा देकर गया है।

मार्क इससे हैरान थे कि आख़िर चपातियों से भरा ये बोरा कौन देकर गया होगा? कुछ दिन बाद ख़बरें आने लगीं कि इस तरह के बोरे आस–पास के हर गांव व चौकियों में भी मिल रहे हैं। इसके बाद मार्क ने मामले को गंभीरता से लिया और इसकी जांच शुरू कर दी।

इस दौरान मार्क को जांच में भारतीय सिपाहियों की मदद का कोई फ़ायदा नहीं मिल रहा था, क्योंकि वे स्वयं भी चपाती बनाने और बांटने में सहयोग कर रहे थे। एक अनुमान के अनुसार करीब 90 हज़ार से अधिक भारतीय पुलिसकर्मी एकजुट होकर चपातियों के बोरे एक गांव से दूसरे गांव पहुंचा रहे थे।

इस तरह से मार्क की नाक के नीचे गांव–गांव चपाती पहुंचती रही। इस दौरान अंग्रेज़ों के हाथ कोई ख़ास सबूत तो नहीं लगे लेकिन जांच के दौरान उन्हें पता चला कि एक गांव में जो चपाती बनती है, वो एक ही रात में 300 किमी तक का सफ़र तय कर दूसरे गांव तक पहुंच जाती हैं। यानी चपाती पहुंचने की ये सुविधा उस दौर की ब्रिटिश मेल सुविधा से कहीं तेज़ थी। भारतीयों की ये चाल ब्रिटिश अधिकारियों के लिए सिर दर्द बनती जा रही थी।

कुछ समय बाद चपाती बांटने की ये मुहिम और भी तेज़ हो गयी। भारतीयों की ये मुहिम मध्य भारत से लेकर नर्मदा नदी के किनारे होते हुए नेपाल तक इसकी पहुंच बन चुकी थी। हालांकि, इस दौरान चपाती बांटने वाले भी इस रहस्य से अंजान थे कि आख़िर ये सब हो क्यों रहा है? गांव में बस एक अंजान आदमी आता और रोटियों का बोरा थमाकर चला जाता। संदेश होता कि और रोटियां बनाओ और दूसरे गांव पहुंचाओ. क्यों? इसका जवाब किसी के पास नहीं है। ब्रिटिश अधिकारियों को अपने किसी सवाल का जवाब नहीं मिल रहा था। अब कुछ था तो वो केवल अफ़वाहें। इस दौरान कयास लगाए जाने लगे कि रोटियों के ज़रिए कोई गुप्त संदेश पहुंचाया जा रहा है। शायद कोई बहरूपिया सीमा पार करने के लिए रोटियों की मदद ले रहा है या फिर कोई गुप्त आंदोलन की योजना बन रही है। हालांकि, ये केवल कयास ही निकले, सबूत नहीं मिले। सन 1857 के विद्रोह से संबंधित कुछ दुर्लभ दस्तावेजों में लिखा है कि 5 मार्च 1857 तक चपाती अवध से रुहेलखंड और फिर दिल्ली समेत नेपाल तक पहुंच गई थी। ब्रिटिश अधिकारियों को जब कुछ नहीं सूझा तो उन्होंने आंदोलन को रोकने के लिए सरकारी नमक में गाय और सुअर के खून के छीटे फेंकना शुरू कर दिया ताकि हिंदू–मुस्लिम इन्हें हाथ न लगा पाएं। अफ़वाह फैलाई गई कि आटे में सुअर का मांस मिलाकर बेचा जा रहा है। हालांकि, ब्रिटिश अधिकारियों की ये सारी कोशिशें नाकाम रहीं। गांव वाले अपने खेत के गेंहू से आटा पीसते और फिर चपाती बनाते और बांटते, ये क्रम निरंतर जारी रहा. कुछ ही समय में मध्य भारत, दिल्ली, उप्र, कलकत्ता, गुजरात तक चपाती की धमक पहुंच चुकी थी। ब्रिटिश तंत्र बुरी तरह हिला हुआ था, क्योंकि किसी को इस रहस्यमय आंदोलन का मकसद समझ नहीं आ रहा था।

देश के क्रांतिकारियों की ये छोटी सी मुहिम भी ब्रिटिश हुकूमत की नींद उड़ाने के लिए काफ़ी थी। इसके परिणाम स्वरुप ही 10 मई 1857 को मेरठ से ब्रिटिश राज के ख़िलाफ़ पहला सशस्त्र विद्रोह फूटा था। इस आंदोलन के बारे में एक कहावत ये भी है कि जिस वक़्त मध्य भारत में 'कोलेरा' यानी हैजा नामक बीमारी का प्रकोप फैला था. उस दौरान इस बीमारी से पीड़ित परिवारों को मदद पहुंचाने के लिए 'चपाती आंदोलन' चलाया गया था। हालांकि, इतिहास के पन्नों में इस बात के सबूत भी नहीं मिलते हैं। अंततः 'चपाती आंदोलन' अंग्रेज़ों के लिए हमेशा के लिए एक रहस्य ही रहा। इससे दुःखद बात ये रही कि हमारे इतिहासकारों ने भी कभी इसे टटोलने की कोशिश ही नहीं की।

निषाद समाज के नेता निषाद समाज को गुमराह करते हैं 5 साल का मंत्री कार्यकाल होता है 4.5 साल सोते हैं शेष 6 महीना बसता है तो जनता में अपना परिचय देना के लिए महाकुंभ उतर रहे हैं महा कुंभकरण हो गए हैं जब महार जाति का जाति प्रमाण पत्र दिल्ली संसद भवन लखनऊ विध. ानसभा में हल नहीं हो पाया रामगढ़ ताल चंपा देवी पार्क गोरखपुर में महाकुंभ करने से समाज को धोखा देने का कार्य कर रहे हैं तथा कथित निषाद समाज के नेताओं से निषाद समाज को सावधान रहने की आवश्यकता है : उमाशंकर

डॉक्टर संजय निषाद व जयप्रकाश पर उमाशंकर मझावार ने लगाए गंभीर आरोप

- स्वार्थ की राजनीति कर रहे हैं संजय व जयप्रकाश
- समुदाय का नहीं स्वयं का विकास करते हैं दोनों नेता
- जयप्रकाश विधायक चड्डा प्राप्त मंत्री रहे तो पत्नी को बनाया ब्लॉक प्रमुख

गोरखपुर। पूर्वांचल में निषाद समुदाय के सर्वविदित नेता स्व .जमुना प्रसाद निषाद रहे। खासकर गोरखपुर की धरती पर समय–समय पर कई अनुसार नेता पैदा हुए लेकिन ऐसा करके स्वयं विकास की राजनीति किया बानगी के तौर पर डॉक्टर संजय निषाद ने अपने परिवार में सांसद व विधायक बनाया तो उधार के क्योंकि चुनाव तो भाजपा के सिंबल पर लड़ा। डॉक्टर संजय निषाद के सांसद व विधायक पुत्र हो सकते हैं लेकिन असलियत तो ये भाजपा के हैं। निषाद पार्टी के नहीं। विधानसभा चुनाव 2022 में समुदाय के किसी व्यक्ति को टिकट नहीं दिया ना तो पंचायत बनाया। वही निगम चुनाव में निषाद समुदाय की भागीदारी शून्य रही। महाकुंभ के जरिए अपनी जमीन तलाश रहे जयप्रकाश निषाद आरक्षण की ओट लेकर नेता बनने के फिराक में हैं लेकिन राज्यसभा सांसद रहते हुए संसद में या किसी मंच पर या फोरम पर आरक्षण का मुद्दा नहीं उठाया। जयप्रकाश निषाद को मौका मिला तो उन्होंने अपनी पत्नी को ब्लॉक प्रमुख बनवाया था। सपा नेता राम नगीना के कार्यकाल में दो बार जिला पंचायत अध्यक्ष के चुनाव के प्रत्याशी पर्चा दाखिला नहीं कर पाया और तो और जिला पंचायत सदस्य 2021 भी चुनाव हार गए। निषाद महाकुंभ के नेता बनने व मसीहा बनने की फिराक में तो नेता अपना विचार और परिवार का विकास करेंगे लेकिन समुदाय का नहीं क्योंकि इनका इतिहास रहा है कि समुदाय का उपयोग कर सकता हासिल करना यह कुछ आरोप एक प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से उमाशंकर नगर मंडल अध्यक्ष मझवार उत्थान सेवा समिति ने लगाया।

निधन पर शोक

गोरखपुर। समाचार पत्र विक्रेता संघ एक शोक सभा विगत दिनों 25 जुलाई को टाउन हॉल के मैदान में रानी लक्ष्मीबाई मूर्ति के पास जिला अध्यक्ष उमाशंकर मझवार की अध्यक्षता में संपन्न हुई जिसमें समाचार पत्र विक्रेता संघ के सदस्य आत्मा प्रसाद अग्रहरी उम्र करीब 60 वर्ष निवासी मोहल्ला शेखपुर गोरखपुर के निधन होने पर 2 मिनट मौन रखकर ईश्वर से मृत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई तथा गहरा शोक व्यक्त किया गया। शोक सभा में रामाज्ञा निषाद नवनीत कुमार यादव विनोद कुमार तिवारी धर्मेंद्र कुमार अनंत लाल गुप्ता विजय कुमार गुप्ता मोतीलाल सुभाष चंद्र बोस हुआ राजकुमार महमूद सिद्दीकी ओम प्रकाश अग्रहरि मुक्तिनाथ दिनेश चंद्र अग्रहरी सुनील कुमार गुप्ता चंदन हरिलाल ब्रह्मचारी दुबे ओमप्रकाश मेघवाल राम सजीवन निषाद राजन पासवान सत्येंद्र यादव सुरेंद्र कुमार महेंद्र कुमार मेघवाल सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

सिद्धरमैया के पड़ोसी ने विरोध का निकाला खास रास्ता



बेंगलुरू। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के सामने विरोध करने का उनके ही पड़ोसी ने खास तरीका निकाला है। उनके पड़ोसी ने मुख्यमंत्री सिद्धरमैया से तंग आकर ऐसा कदम उठा लिया जिसकी हर तरफ चर्चा हो रही है। इस मामले में बुजुर्ग व्यक्ति ने सिद्ध रमैया की गाड़ी का रास्ता रोक लिया। घटना कर्नाटक के बेंगलुरु में मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के घर के सामने रहने वाले व्यक्ति ने ये कदम उठाया है।
दरअसल बुजुर्ग व्यक्ति मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के घर के सामने ही रहता है। यहां उसके घर के सामने लगातार कई गाड़ियां खड़ी रहती है, जिससे पार्किंग की काफी समस्या हो जाती है। इस समस्या से निजात पाने के लिए मुख्यमंत्री सिद्धरमैया की गाड़ी का रास्ता ही बुजुर्ग व्यक्ति ने रोक लिया। पड़ोसी ने बताया कि वो इस समस्या से बीते पांच वर्षों से जूझ रहा है, जिसका हल उसने मांगा। इस दौरान पड़ोसी ने सबसे पहले अपनी पांच वर्षों से चल रही समस्या का निपटारा करने की मांग की। वरिष्ठ नागरिक की पहचान पुरुषोत्तम के रूप में हुई है जो उसके घर के सामने खड़े वाहनों की लंबी कतार से परेशान होकर सड़क पर चिल्लाने लगा। इस घटना का एक वीडियो बृहस्पतिवार को सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से प्रसारित हुआ। यह ज्ञात नहीं है कि मुख्यमंत्री ने बुजुर्ग व्यक्ति की समस्या का निदान किया या नहीं।

घर के सामने वाहन खड़ा करने वालों को डांटते हुए बुजुर्ग ने बताया कि वह पिछले पांच वर्षों से परेशान है लेकिन किसी ने कुछ नहीं किया। बुजुर्ग ने कहा, तुम्हारे पास (गाड़ियां) खड़ी करने के लिए कोई दूसरी जगह नहीं है। तुम्हें सिर्फ मेरे घर का मुख्य दरवाजा ही मिलता है? मुख्यमंत्री की सुरक्षा में लगे पुलिस के जवानों और अधिकारियों पर चिल्लाने के दौरान मुख्यमंत्री की कार मुख्य दरवाजे से बाहर आई। वह कार के सामने खड़ा हो गया और रास्ता रोक दिया। मुख्यमंत्री ने कार का शीशा नीचे करते हुए बुजुर्ग की समस्या सुनी। पुरुषोत्तम ने कहा, यहां यातायात का कोई नियम नहीं है। हर जगह रास्ता अवरुद्ध है। मैं अपने घर में प्रवेश नहीं कर पा रहा हूं। मैं पिछले पांच वर्षों से परेशान हूं। लोग यहां किसी भी तरह वाहन खड़ा कर देते हैं। अधिकारियों ने जबरदस्ती पड़ोसी को हटा दिया जिसके बाद मुख्यमंत्री का काफिला आगे बढ़ गया।

जब 1962 युद्ध के दौरान नेहरू ने बच्चों से की थी अनोखी अपील

भारत के अधिकांश घरों में सभी बच्चों में कुछ आदतें विकसित की जाती हैं। इनमें से एक गुल्लक (मिट्टी के बॉक्स में पैसे) में बचत करेन की आदत। पैसे में की जाने वाली बचत अनिवार्य रूप से रिश्तेदारों से मिलने या कुछ त्योहारों पर दिए गए उपहारों से होती थी और कभी–कभी, जब हमें दुकानों में भेजा जाता था तो बचने वाले खुले पैसों से होती थी। समय–समय पर हमें अपना गुल्लक तोड़ने के लिए कहा जाता था। यह पैसे निकालने का एकमात्र तरीका था और उस बचत में से कुछ को हमारे शि क्षकों द्वारा समर्थित कुछ कारणों के साथ साझा करने के लिए कहा जाता था। अभी भी उत्तर भारत में रामलीला और बंगाल में पूजा के लिए एक लोकप्रिय प्रथा है। अभी भी दान के माध्यम से आयोजित की जाती हैं। अभी कुछ ही दिन पहले, मुंबई में दही हांडी उत्सव का आयोजन इतने पैसे से किया गया था, जिसमें लाखों रुपये की भारी पुरस्कार राशि भी शामिल थी! इस प्रकार का दान–संपत्ति सहित समय, कौशल और मौद्रिक योगदान भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग रहा है। भारतीय उपमहाद्वीप में जन्मे और प्रचलित सभी धर्म जरूरतमंदों की भलाई के लिए दान देने को प्रोत्साहित करते हैं। पक्षियों और जानवरों को खाना ि खलाने से लेकर प्याऊ तक, जो उत्तर भारत में एक प्रथा है (राहगीरों को पीने का पानी उपलब्ध कराना), ये देने की सार्वभौमिक प्रथाएं हैं, जिनमें से अधिकांश हमारे लिए दूसरी प्रकृति है। दूसरों की भलाई में योगदान देने की ये प्रथाएँ, एक व्यापक सामाजिक भलाई, इस क्षेत्र में बड़े होने के समाजीकरण का हिस्सा थीं।

स्वतंत्रता–पूर्व भारत में महात्मा गांधी ने नागरिकों और व्यापारिक समुदाय से ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम के लिए स्वयंसेवकों की लामबंदी को प्रोत्साहित करने के लिए रचनात्मक सामाजिक कार्य प्रथाओं का समर्थन करने का आह्वान किया। व्यवसाय समुदाय के सदस्यों द्वारा समाज के लाभ के लिए दान करने और जरूरतमंदों की मदद करने की यह प्रथा आज भी जारी है।

राष्ट्र निर्माण के लिए परोपकार के 25 वर्ष

आज़ादी के पहले 25 वर्षों (1947–72) के दौरान परोपकारी गतिविधियाँ आज़ादी से पहले की तरह ही जारी रहीं। तात्कालिक और प्रत्यक्ष कारणों के लिए स्थानीय दान लोकप्रिय रहा। धार्मिक उद्देश्यों के लिए दान, एक सदियों पुरानी प्रथा, इस अवधि के दौरान भी एक पसंदीदा प्रथा थी। मंदिरों, मस्जिदों, चर्चों और गुरुद्वारों का निर्माण दान के माध्यम से किया गया था। सूखे या बाढ़ की स्थिति में, दानदाताओं तक पहुंचने और उन्हें जुटाने के लिए ठोस प्रयास किए गए।

उस समय, राहत में योगदान के चैनल मुख्य रूप से सरकार द्वारा नियंत्रित थे। 1962 में चीन के साथ युद्ध और 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान तत्कालीन प्रधान मंत्री ने समर्थन की अपील की थी, तो बच्चों से भी अपने गुल्लक तोड़ने के लिए कहा गया था।



मुख्यमंत्री ने शहीदों की प्रतिमाओं पर पुष्प अर्पित कर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज पूरा देश कारगिल विजय दिवस के अवसर पर भारत माता के उन सभी महान सपूतों के प्रति नमन करते हुए उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है, जिन्होंने देश की आजादी को अक्षुण्ण रखने तथा भारत की एकता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। सीएम ने कहा कि गत 26 जुलाई को यहां कारगिल शहीद स्मृति वाटिका में कारगिल विजय दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि कारगिल युद्ध स्वतंत्र भारत का एक ऐसा युद्ध है, जो पाकिस्तान ने भारत पर जबरन थोपा था। यह युद्ध मई, 1999 में प्रारम्भ हुआ था और 26 जुलाई, 1999 को आज ही के दिन कारगिल युद्ध में भारत की विजय की घोषणा भी हुई थी। इस विजय के साथ ही, पूरी दुनिया में पाकिस्तान बेनकाब हुआ था। साथ ही, भारत के बहादुर जवानों के शौर्य, पराक्रम को पूरी दुनिया ने देखा था। इस युद्ध में अनेक वीर सैनिकों ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। लखनऊ के कैप्टन मनोज कुमार पाण्डेय, कैप्टन आदित्य मिश्र, लांसनायक केवलानन्द द्विवेदी, राइफलमैन सुनील जंग तथा मेजर रितेश शर्मा का नाम पूरा देश बड़े गर्व व सम्मान के साथ लेता है। सीएम ने कहा कि कैप्टन मनोज कुमार पाण्डेय को युद्ध के उपरान्त उनकी अति असाधारण वीरता, अदम्य साहस, उत्कृष्ट नेतृत्व तथा कर्तव्यनिष्ठा के लिए भारतीय सेना का सर्वोच्च सम्मान परमवीर चक्र प्रदान किया गया था। प्रदेश सरकार ने लखनऊ में सन् 1960 में स्थापित देश के पहले सैनिक स्कूल का नामकरण कैप्टन मनोज कुमार पाण्डेय के नाम पर किया। इसके साथ ही, सूबेदार मेजर पद को सुशोभित करने वाले तत्कालीन लांस नायक योगेन्द्र यादव को भी परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। सीएम ने कहा कि इन बलिदानियों का राष्ट्र के प्रति प्रेम, मातृभूमि के लिए प्राण न्यौछावर करने की भावना, उनका साहस तथा वीरता के बारे में सोचकर ही प्रत्येक भारतवासी रोमांचित हो उठता है। पूरा राष्ट्र उनके प्रति ऋणी है।



मंत्री राजनाथ सिंह ने बुधवार को 24 वे कारगिल विजय दिवस के अवसर पर कारगिल युद्ध इतवारा पुष्प चक्र अर्पित करते हुए 1999 के कारगिल युद्ध में अपना जीवन होम करने वाले सैनिकों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि भारत अपना सम्मान और प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए नियंत्रण रेखा को पार करने को तैयार है क्योंकि जब भी युद्ध की स्थिति रहती है तो देश की जनता ने हमेशा देश के जवानों का समर्थन किया है।





गोरखपुर। भारत नेपाल मैत्री समाज वीर सेनानी कल्याण संस्थान ने गत बुधवार को 24वां कारगिल विजय दिवस पर कूड़ाघाट स्थित अमर शहीद लेफ्टिनेंट गौतम गुरुंग की प्रतिमा पर पुष्पार्चन किया। अध्यक्ष अनिल कुमार गुप्ता ने कहा कि हमारे बहादुर सैनिकों ने अपने प्राणों की आहुति देकर दुर्गम लड़ाई को आसानी से जीत लिया था। इस दौरान कमल किशोर गुप्ना, महेश गुप्ता, अनिरुद्ध शाही, ओंकारनाथ मिश्र, एए हसन, आरएस यादव, डीबी थापा समेत अन्य लोग मौजूद रहे। उधरए जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय में विंग कमांडर मुकेश तिवारी की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में शहीदों को नमन किया गया। यहां मुख्य अतिथि रिटायर्ड मेजर जनरल शिव जायसवाल व गोविंद मिश्रा ने सैनिकों के अदम्य साहस को याद किया।

दूर रह मेरी हदों से



सुंदर गांव था मेरा दूर पहाड़ पर
न जाने किस की नज़र लग गई
देखते ही देखते बह गया सब कुछ
श्मशान पर अर्थियों की दुकान सज गई
हर तरफ चित्कार थी हाहाकार थी
नज़रें ढूंढ रही थी अपनों को पर लाचार थी
समझ नहीं आ रहा था तरक्की का मतलब
कुदरत की गलती थी या मानवता गुनहगार थी
सदियों से चल रहा झूमता मुस्कुराता उसी रास्ते
दरिया ने आखिर क्यों बदला अपना रास्ता
समेट कर रख दिया था दरिया को सीमाओं में
पड़ा ही नहीं था मानव का अभी उससे वास्ता
अपना अस्तित्व बचाने को दरिया ने जोर लगाया
अतिक्रमण जो किया था एक ही बार में हटाया
अपने दायरे में उसके जो आता था सब ले लिया
मत समझ मुझे कमज़ोर यह मानव को समझाया
दूर रह मेरी हदों से मत कर इनसे छेड़छाड़
मेरे अस्तित्व पर जो वार करेगा दूंगी उसको फाड़
यह तो मेरा केवल ट्रेलर था जो तुमने अभी देखा है
अभी तो देखा कहाँ तूने मेरा गुस्सा और दहाड़

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

हर–हर महादेव



आदिपुरुष तुम,पूरणकर्ता, शिव,शंकर,महादेव।
नंदीश्वर तुम,एकलिंग तुम,हो देवों के देव ।।
तुम फलदायी,सबके स्वामी,तुम हो दयानिधान।
जीवन महके हर पल मेरा,दो ऐसा वरदान।।
कष्ट निवारण सबके करते,तुम हो श्री गौरीश।
देते हो भक्तों को हरदम,तुम तो नित आशीष।।
कार्तिकेय,गजानन आये,बनकर पुत्र तुम्हारे।
संतों,देवों ने सुख पाया, भक्त करें जयकारे।।
तुम हो स्वामी,अंतर्यामी,केशों में है गंगा।
ध्यान धरा जिसने भी स्वामी,उसका मन हो चंगा।।
तुम अविनाशी,काम के हंता,हर संकट हर लेव।
भोलेबाबा,करूं वंदना,हे देवों के देव ।।
तुम त्रिपुरारी, जगकल्याणक,महिमा का है वंदन।
बार बार करते हम सारे,औघड़दानी वंदन।।
पर्वत कैलाशी में डेरा,भूत प्रेत सँग रहते।
सुरसरि की पावन जलधारा,आप लटों से बहती।।
उमासंग तुम हर पल शोभित,अर्ध्दनारीश कहाते।
हो फक्खड़ तुम,भूत–प्रेत सँग,नित शुभकर्म रचाते।।
परम संत तुम,ज्ञानी,तपसी,नाव पार कर देव ।
महाप्रलय ना लाना स्वामी,हे देवों के देव ।।

–प्रो (डॉ) शरद नारायण खरे

प्राचीन भारत में कही नहीं था छुआछूत, जाति शोषण की बातें मिथ्या ..!



राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए जातिवादी नेताओं ने जो जहर घोला है उससे ऊपर निकलो दोस्तों। वह सच सुनो जिसे लेकर तुम्हे सनातन से भटका कर बौद्ध , भीम , यदुवंशी , कौरववंशी , रघुवंशी , रावणवंशी इत्यादि सरनेम लिखना पड़ रहा। प्राचीन समय भारत मे कभी छुआछुत रहा ही नहीं, और ना ही कभी जातियाँ भेदभाव का कारण होती थी।

राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए जातिवादी नेताओ ने जो जहर घोला है उससे ऊपर निकलो दोस्तो। वह सच सुनो जिसे लेकर तुम्हे सनातन से भटका कर बौद्ध , भीम , यदुवंशी , कौरववंशी , रघुवंशी , रावणवंशी इत्यादि सरनेम लिखना पड़ रहा। प्राचीन समय भारत मे कभी छुआछुत रहा ही नहीं, और ना ही कभी जातियाँ भेदभाव का कारण होती थी। चलिए हजारो साल पुराना इतिहास पढ़ते हैं। सम्राट शांतनु ने विवाह किया एक मछवारे की पुत्री सत्यवती से।उनका बेटा ही राजा बने इसलिए भीष्म ने विवाह न करके,आजीवन संतानहीन रहने की भीष्म प्रतिज्ञा की। सत्यवती के बेटे बाद में क्षत्रिय बन गए, जिनके लिए भीष्म आजीवन अविवाहित रहे, क्या उनका शोषण होता होगा? महाभारत लिखने वाले वेद व्यास भी मछवारे थे, पर महर्षि बन गए, गुरुकुल चलाते थे वो। विदुर, जिन्हें महा पंडित कहा जाता है वो एक दासी के पुत्र थे, हस्तिनापुर के महामंत्री बने, उनकी लिखी हुई विदुर नीति, राजनीति का एक महाग्रन्थ है। भीम ने वनवासी हिडिम्बा से विवाह किया। श्री कृष्ण दूध का व्यवसाय करने वालों के परिवार से थे, उनके भाई बलराम खेती करते थे, हमेशा हल साथ रखते थे। यादव क्षत्रिय रहे हैं, कई प्रान्तों पर शासन किया और श्री कृष्ण सबके पूजनीय हैं, गीता जैसा ग्रन्थ विश्व को दिया।

भगवान राम के साथ वनवासी निषादराज गुरुकुल में पढ़ते थे। उनके पुत्र लव कुश महर्षि वाल्मीकि के गुरुकुल में पढ़े जो वनवासी थे तो ये हो गयी वैदिक काल की बात, स्पष्ट है कोई किसी का शोषण नहीं करता था,सबको शिक्षा का अधिकार था, कोई भी पद तक पहुंच सकता था अपनी योग्यता के अनुसार। वर्ण सिर्फ काम के आधार पर थे वो बदले जा सकते थे, जिसको आज इकोनॉमिक्स में डिवीज़न ऑफ़ लेबर कहते हैं वो ही। प्राचीन भारत की बात करें, तो भारत के सबसे बड़े जनपद मगध पर जिस नन्द वंश का राज रहा वो जाति से नाई थे । नन्द वंश की शुरुवात महापद्मनंद ने की थी जो की राजा नाई थे। बाद में वो राजा बन गए फिर उनके बेटे भी, बाद में सभी क्षत्रिय ही कहलाये। उसके बाद मौर्य वंश का पूरे देश पर राज हुआ, जिसकी शुरुआत चन्द्रगुप्त से हुई,जो कि एक मोर पालने वाले परिवार से थे और एक ब्राह्मण चाणक्य ने उन्हें पूरे देश का सम्राट बनाया । 506 साल देश पर मौर्यों का राज रहा।फिर गुप्त वंश का राज हुआ, जो कि घोड़े का अस्तबल चलाते थे और घोड़ों का व्यापार करते थे।140 साल देश पर गुप्ताओं का राज रहा। केवल पुष्यमित्र शुंग के 36 साल के राज को छोड़ कर 92þ समय प्राचीन काल में देश में शासन उन्ही का रहा, जिन्हें आज दलित पिछड़ा कहते हैं तो शोषण कहां से हो गया? यहां भी कोई शोषण वाली बात नहीं है। फिर शुरू होता है मध्यकालीन भारत का समय जो सन 1100– 1750 तक है, इस दौरान अधिकतर समय, अधिकतर जगह मुस्लिम आक्रमणकारियो का समय रहा और कुछ स्थानों पर उनका शासन भी चला। अंत में मराठों का उदय हुआ, बाजी राव पेशवा जो कि ब्राह्मण थे, ने गाय चराने वाले गायकवाड़ को गुजरात का राजा बनाया, चरवाहा जाति के होलकर को मालवा का राजा बनाया।अहिल्या बाई होलकर खुद बहुत बड़ी शिवभक्त थी। ढेरों मंदिर गुरुकुल उन्होंने बनवाये। मीरा बाई जो कि राजपूत थी, उनके गुरु एक चर्मकार रविदास थे और रविदास के गुरु ब्राह्मण रामानंद थेद्य। यहां भी शोषण वाली बात कहीं नहीं है। मुग़ल काल से देश में गंदगी शुरू हो गई और यहां से पर्दा प्रथा, गुलाम प्रथा, बाल विवाह जैसी चीजें शुरू होती हैं। 1800 –1947 तक अंग्रेजो के शासन रहा और यहीं से जातिवाद शुरू हुआ । जो उन्होंने फूट डालो और राज करो की नीति के तहत किया। अंग्रेज अधिकारी निकोलस डार्क की किताब "कास्ट ऑफ़ माइंड" में मिल जाएगा कि कैसे अंग्रेजों ने जातिवाद, छुआछूत को बढ़ाया और कैसे स्वार्थी भारतीय नेताओं ने अपने स्वार्थ में इसका राजनीतिकरण किया। इन हजारों सालों के इतिहास में देश में कई विदेशी आये जिन्होंने भारत की सामाजिक स्थिति पर किताबें लिखी हैं, जैसे कि मेगास्थनीज ने इंडिका लिखी, फाहियान, ह्यू सांग और अलबरूनी जैसे कई। किसी ने भी नहीं लिखा की यहां किसी का शोषण होता था। योगी आदित्यनाथ जो ब्राह्मण नहीं हैं, गोरखपुर मंदिर के महंत हैं, पिछड़ी जाति की उमा भारती महा मंडलेश्वर रही हैं। जन्म आधारित जाति को छुआछुत व्यवस्था हिन्दुओ को कमजोर करने के लिए लाई गई थी। इसलिए भारतीय होने पर गर्व करें और घृणा, द्वेष और भेदभाव वाले बनिया,ब्राम्हण,क्षत्रिय सूद्र,जाट,गुर्जर वाले षड्यंत्रों से खुद भी बचें और औरों को भी बचाएं।



पंकज कुमार मिश्रा

हिन्दू राष्ट्र का मूलमंत्र : हिन्दुओं का सैन्यीकरण और राजनीति का हिन्दूकरण

हिन्दुत्व आधुनिक जमाने की अवधारणा है। बस, बीसवीं सदी की, जब पहली दफा विनायक दामोदर सावरकर (1883–एक किताब लिखी और अपने हिन्दू राष्ट्रवादी विचारों का प्रतिपादन किया। इसके 1966) ने 1923 में इसी नाम (हिन्दुत्वः हू इज अ हिन्दू) से पूर्व उन्नीसवीं सदी में राजा राममोहन राय ने अपने एक लेख में इससे मिलते जुलते हिन्दुइज्म (हिन्दूवाद) शब्द का प्रयोग किया था। सावरकर महाराष्ट्र–वासी थे, जहाँ बाल गंगाधर तिलक (1856–1920) ने जुझारु राष्ट्रवाद की एक परंपरा विकसित की थी। वह रत्नागिरी जिले से आते थे और पुणे उनका गढ़ था। चूं, पूरे महाराष्ट्र में, और बाद के समय में पूरे उत्तर भारत में उनकी तूती बोलती थी।

नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाले भाजपा–काल पर संघ की पकड़ कितनी है, इसकी समीक्षा अभी चल रही है। भीतर सब कुछ सही ही नहीं है। लेकिन इतना निश्चित है कि समा. जवादियों, कम्युनिस्टों और यहां तक कि कांग्रेस को भी संघ ने पीछे धकेल दिया है। यह संघी हिन्दुत्व की एक खास विचारधारा है जो अन्य हिन्दू चिंतन से अलग है।
मदनमोहन मालवीय और श्यामाप्रसाद मुखर्जी के हिन्दू–चिंतन से पृथक यह ऐसा चिंतन है, जिसकी वैचारिक जड़ें यूरोपीय फासीवादी विचारधारा में है। यह नीत्शे की विचारधारा के करीब है, जो मूलतः नास्तिक दर्शन है। नीत्शे ईश्वर को नापसंद करता था, बुद्ध और क्राइस्ट को भी।



तिलक का हिन्दूवाद– महादेव गोविंद रानाडे की परंपरा को गोपालकृष्ण गोखले और ज्योति बा फुले की परंपरा को भीमराव अंबेडकर ने विकसित किया।

इसी क्रम में तिलक की परंपरा से सावरकर को जोड़ने की बात मैंने की हैं। हालांकि इसकी जटिलताएं भी विचारणीय हैं। तिलक का हिन्दूवाद (गणेशोत्सव आदि) लक्ष्य नहीं, साधन है। उनका लक्ष्य ब्रिटिश सत्ता को येन केन उखाड़ फेंकना था। लेकिन सावरकर का लक्ष्य ही हिन्दुत्व है। यह हिन्दुत्व ही उनके राष्ट्रवाद की आत्मा है, जिसे उन्होंने अपनी किताब 'हिन्दुत्व' में प्रतिपादित किया है। राष्ट्रवाद के अन्य प्रारूप उन्हें मान्य नहीं हैं। उनके इसी राष्ट्रवाद को साकार करने के लिए उनके अनुयायियों ने 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की, जिनमें उनके एक सहोदर भाई भी थे। सावरकर के हिन्दू राष्ट्र का मूलमंत्र है– हिन्दुओं का सैन्यीकरण और राजनीति का हिन्दूकरण। कुल मिला कर यह हिन्दूवाद का नागपुर स्कूल है, जिस पर अनेक सवालिया निशान हैं। हिन्दूवाद का दूसरा स्कूल बंगाल में था, जो बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय (1838–1894) और कुछ दूसरे लोगों की अगुआई में उठा। लेकिन यह निर्गुण रूप में ही बना रहा। बंगाल में भी नवजागरण का जोर था, जिसकी सांस्कृतिक वैचारिक जड़ें भक्ति आंदोलन में नहीं, यूरोपीय रेनेसां आंदोलन में थीं। यही कारण रहा कि बंगला नवजागरण कुछ चुने हुए परिवारों में सिमट कर रह गया। इसका सामाजिक आधार एक छोटा–सा भद्रलोक था। इसके विपरीत बंकिम का हिन्दुत्व एक खास सांस्कृतिक आवेग के साथ बन्दे मातरम जैसे नारों में देश भर में छा गया। बंगला हिन्दुत्व का मुख्य केंद्र कोलकाता और ढाका था। यद्यपि अनुशीलन समिति ने आतंकवाद का सहारा लिया, किन्तु वह हिन्दुओं के सैन्यीकरण के पक्ष में नहीं थी। उनका हिन्दुत्व यदि कुछ था भी तो एक ऐसे निर्गुण रूप में, जो हिन्दुओं की मुक्ति जरूर चाहता था, उनका वर्चस्व नहीं। उनका राष्ट्र धर्मकेंद्रित नहीं था।

हिन्दुत्व का तीसरा और चौथा स्कूल –

तीसरा और चौथा स्कूल हिन्दी क्षेत्र में था, जिसका केंद्र बनारस और लाहौर था। लाहौर का हिन्दुत्व स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824–1883) के आर्य समाज से प्रभावित था और जैसा कि जाहिर है आर्य समाज की वेदों की ओर लौटो के नारे से अनुप्राणित था। उसका प्रभाव पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक था। बनारस में एक दूसरी लहर थी। यहां का हिन्दुत्व एक और ही रंग और मिजाज लिए था। महामना के लोक–विरुद्ध से सम्मानित मदनमोहन मालवीय (1861–1946) इसके प्रस्तावक और नेता थे। मालवीय का हिन्दुत्व राष्ट्रीय आंदोलन का संपूरक था। सावरकर हिन्दुओं के सैन्यीकरण पर जोर देते थे, लेकिन मालवीय का हिन्दुत्व हिन्दुओं को शिक्षित करने पर जोर देता था। मालवीय भी हिन्दुओं में छुआछूत और जातिभेद के विरुद्ध थे, लेकिन बहुत सधे कदमों से ही इस ओर अग्रसर होना चाहते थे। उन्होंने पृथक हिन्दू राष्ट्र की कभी बात नहीं की। हां, राष्ट्रीय राजनीति में हिन्दू– हितों के पक्षधर अवश्य थे। हिन्दू राजनीति करने वालों में वह एकमात्र थे, जो कांग्रेस के अध्यक्ष भी बने। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन से हिन्दू हितों को नत्थी करने की पुरजोर कोशिश की, जैसे अंबेडकर ने दलित हितों और स्वामी सहजानंद ने किसान हितों से जोड़ने के लिए की। लेकिन किसी भी स्तर पर हिन्दू राष्ट्र उनका लक्ष्य कभी नहीं रहा। बंगला और हिन्दी इलाके के हिन्दूवादियों, जिन्हें हम सुविधा के लिए कोलकाता और बनारस स्कूल भी कह सकते हैं, में एक समानता है। इन दोनों स्कूलों ने हिन्दू हितों की बात जरूर की, लेकिन हिन्दू वर्चस्व की कभी बात नहीं की और जैसा कि पहले ही बताया, इन लोगों ने कभी हिन्दू राष्ट्र की भी बात नहीं की। यही वह अवसर था जब जिन्ना की धर्म केंद्रित द्विराष्ट्रवाद की राजनीति परवान चढ़ी और 15 अगस्त, 1947 के दिन हमारा देश एक ही साथ टूटा और आजाद हुआ। बंगाल, पंजाब और बिहार में भीषण सांप्रदायिक दंगे हुए। लेकिन हिन्दू महासभा ने कोई गैर–जिम्मेदार काम नहीं किया। साम्प्रदायिक दंगे बंगाल में अधिक केंद्रित थे, जहां मुस्लिम लीग के सैनिक दस्ते नेशनल गार्ड से अनुशीलन समिति ने मुकाबला किया था। महाराष्ट्र या नागपुर में भी कोई बड़ा फसाद नहीं हुआ। लेकिन इस भीषण घड़ी में आरएसएस ने अपने को इस पूरे हिन्दी इलाके में फैला लिया। गांधी की हत्या के बाद आरएसएस जब प्रतिबंधित हुआ, तब एकबारगी नागपुर स्कूल का हिन्दुत्व देश की नजरों में आया।

कांग्रेस में भीतरी संघर्ष तीव्रतर–

यही समय था, जब कांग्रेस के भीतर वाम और दक्षिण का संघर्ष तीव्रतर होता चला गया। 1948 में कांग्रेस के भीतर सक्रिय समाजवादी, जो कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (सीएसपी) के बैनर तले काम कर रहे थे, अलग हो गए। इन लोगों ने सोशलिस्ट पार्टी का गठन कर लिया। नेहरू कांग्रेस में अधिक कमजोर हो गए। लेकिन वह सत्ता में थे, इसलिए उनका प्रभाव बना रहा। दिसम्बर, 1950 में सरदार पटेल की मृत्यु हो गई। इसके बाद कांग्रेस के भीतर के हिन्दूवादियों ने हिन्दू महासभा के कुछ लोगों के साथ मिल कर 21 अक्टूबर, 1951 को भारतीय जनसंघ' नाम से राजनीतिक दल बना लिया। इसमें संघ के लोग अग्रणी भूमिका में नहीं थे। कांग्रेसी दक्षिणपंथियों कन्हैया माणिकलाल मुंशी, रघुवीर नारायण, द्वारिकाप्रसाद मिश्रा आदि इसमें प्रमुख भूमिका में थे। 1953 में जनसंघ अध्यक्ष श्यामाप्रसाद मुखर्जी की मृत्यु जम्मू–कश्मीर में हो गई। इस समय तक संघ ने भी स्वयं को संभाल लिया था। कांग्रेस और समाजवादियों के भीतर अपने ही किस्म का कोहराम खडा हो गया था। इन सब अतिथियों का नागपुर के हिंदू स्कूल अर्थात आरएसएस ने फायदा उठाया। आहिस्ता–आहिस्ता उसने जनसंघ को अपनी मुट्ठी में लिया और अंततः उस पर पूरी तरह काबिज हो गए। हिन्दुत्व के बंगला और हिन्दी स्कूल पीछे धकेल दिए गए। उनकी प्रवृत्तियां और विचार खत्म कर दिए गए। नागपुर स्कूल अब एकमात्र हिन्दुत्व की कार्यशाला थी और सावरकर एकमात्र हिन्दू विचारक थे। जनसंघ उनकी एकमात्र राजनीतिक पार्टी थी। हालांकि अब भी उस पर अग्रणी भूमिका हिन्दी इलाके के ही कुछ लोगों की थी, जिनमें दीनदयाल उपाध्याय और अटल बिहारी वाजपेयी प्रमुख थे। पाक अधिकृत कश्मीर के बाल्टिस्तान में जन्मे बलराज मधोक भी अग्रणी भूमिका में रहे, जिनकी नागपुर स्कूल से अंततः नहीं पटी। दीनदयालजी पर नागपुर स्कूल से अधिक मदनमोहन मालवीय का प्रभाव परिलक्षित होता है और अटल बिहारी तो अपनी आजाद तबियत के लिए मशहूर ही थे। 1977 में जनसंघ ने स्वयं का जनता पार्टी में विलय कर लिया और 6 अप्रैल, 1980 को वह भाजपा के रूप में उभरी। गांधीवादी समाजवाद का बैनर लगाकर अटल बिहारी ने इसे कम से कम मध्यमार्गी सेक्युलर दल बनाने की कोशिश की। लेकिन संघ ने कुछ ही समय बाद रामजन्म भूमि का आंदोलन आरम्भ कर दिया और भाजपा उससे जुड़ गई। गांधीवादी समाजवाद की तीन–तेरह हो गई।

भाजपा–काल में संघ की पकड़–

नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाले भाजपा–काल पर संघ की पकड़ कितनी है, इसकी समीक्षा अभी चल रही है। भीतर सब कुछ सही ही नहीं है। लेकिन इतना निश्चित है कि समाजवादियों, कम्युनिस्टों और यहां तक कि कांग्रेस को भी संघ ने पीछे धकेल दिया है। यह संघी हिन्दुत्व की एक खास विचारधारा है जो अन्य हिन्दू चिंतन से अलग है। मदनमोहन मालवीय और श्यामाप्रसाद मुखर्जी के हिन्दू–चिंतन से पृथक यह ऐसा चिंतन है, जिसकी वैचारिक जड़ें यूरोपीय फासीवादी विचारधारा में है। यह नीत्शे की विचारधारा के करीब है, जो मूलतः नास्तिक दर्शन है। नीत्शे ईश्वर को नापसंद करता था, बुद्ध और क्राइस्ट को भी। उसकी एक किताब ही है एंटी–क्राइस्ट'। उसके हिसाब से बुद्ध और क्राइस्ट मनुष्य को दयालु और अंततः कमजोर बना देते हैं। वह सुपरमैन की वकालत करता है। सोशल–डार्विनिस्म की बात करता है, जिसके अनुसार केवल अच्छी नस्लों और बेहतर लोगों को इस धरती पर जीने और विकसित होने का अधिकार होता है।

कमजोर लोग अधिक से अधिक इन योग्यजनों की सेवा कर अपना जीवन धन्य कर सकते हैं। यही तो हिन्दू धर्मशास्त्र मनुस्मृति भी करता है। यही तो ब्राह्मणवादी विचारधारा है। हिंदुत्व का नागपुर स्कूल इसी का पक्षधर और प्रस्तावक है। हिन्दुत्व के अनेक रंगों में अब केवल एक रंग शेष है। अन्य रंग उसी एक में विलीन हो गए, या पराजित हो गए। हिन्दुत्व के नागपुर स्कूल की जीत केवल वामपंथियों की पराजय नहीं है, बल्कि यह गांधीवादियों, अंबेडकर–फुलेवादियों तक की ही पराजय नहीं है। गहराई से देखेंगे तो यह हिंदुत्व की विभिन्न प्रवृत्तियों की भी पराजय है। बंकिम, मदनमोहन मालवीय और श्यामाप्रसाद मुखर्जी के हिन्दूवाद की भी पराजय है।

बेगानों से सोशल मीडिया के जरिये परवान चढ़ता प्रेम या फितूर

इन घटनाक्रमों ने एक बार फिर से सोशल मीडिया की सामाजिकता को लेकर बहस तेज कर दी है। हाल की दोनों घटनाओं को छोड़ भी दें तो देश में हजारों किस्से ऐसे हैं कि जिनमें सोशल मीडिया के जरिये लड़कियों से छल किया गया। उन्हें लूटा गया और उनकी हत्या तक कर दी गई। यह गहन शोध का विषय है। हमने आजतक इस विषय को गम्भीरता से नही लिया है। आजकल की पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर रही है। अंग प्रदर्शन, एशो–आराम, अवांछित स्वतंत्रता, आधुनिकता का दिखावा और अच्छे संस्कारो का अभाव और अनैतिकता और पैसे की प्रति अत्यधिक लगाव जैसी आदतें मुख्य कमजोरी बन गई है। संयुक्त परिवार की अवधारणा समाप्त होती जा रही है। लिहाज और शर्म की भावना लगभग खत्म हो गई है। वहीं वैवाहिक रिश्तों के दरकने को भारतीय समाज के लिये एक बड़ी चुनौती माना जाएगा। जो समाज में कई तरह की विकृतियों को जन्म दे सकता है। रिश्तों की पवित्रता को लेकर पश्चिमी जगत में जिस भारत की मिसाल दी जाती रही है आज वह ही रिश्तों के संक्रमण वाले दौर से गुजर रहा है।

अपने बच्चों को लेकर/छोड़कर चल देने वाले ये रिश्ते आखिर किस सुख की तलाश में भटक रहे हैं? क्या इस भटकन की कोई मंजिल है? नारी नारायणी मिथक पुरातन पड़ गया है। क्या हो गया चरित्र और नैतिकता को? मुझे ऐसा लगा पीढ़ी परिवर्तन है । क्या आदत की लाचार ये पीढ़ी, संस्कारहीन और भौतिक सुखों की लालसा से भरी हुई हैं, मृगमरीचिका बनी हुई हैं और इसी तलाश में मरेगी। वर्तमान में भारत पकिस्तान के साथ दुनिया में सुर्खियां बटोर रही दोनों ही औरतों ने पहले लव मैरिज की है, अब फिर इन्हे प्यार हो गया। न इन्हे मासूम बच्चों की परवाह है? ऐसे रिश्ते सिर्फ समाज को भटकाने का काम करते है। क्योंकि इनकी देखा–देखी और बातें आएंगी आगे। ये सब इसी को स्वतंत्रता कहते हैं। उन मासूम और बेगुनाह बच्चों पर क्या बीत रही होगी। मैं तो यही सोच सोच कर दुखी हो रहा हूं। पर वो दुखी नहीं कि 15 साल की बेटी कैसे दुनिया का सामना करेगी? अभी पाकिस्तानी नागरिक सीमा गुलाम हैदर और भारत के सचिन की असामान्य प्रेम कहानी के उलझे तार सुलझे भी नहीं थे कि राजस्थान की अंजू और पाकिस्तानी प्रेमी नसरुल्ला की प्रेम कहानी के किस्से सुर्खियां बनने लगे। लेकिन इन हालिया प्रेम कहानियों में कई तरह के उलझे पेच भी हैं।

एक तो ये रिश्ते अलग–अलग धर्मों के बीच पनपे हैं दूसरे इनमें परिवारों की कोई भूमिका नहीं रही है। अन्यथा विगत में रिश्तेदारों–पड़ोसियों या कारोबारी संबंधों के जरिये ये प्रेम कहानियां सिरे चढ़ती रही हैं। हालिया दोनों प्रेम कहानियों में ये चीज एक जैसी है कि प्रेम सोशल मीडिया के जरिये परवान चढ़ा। हालांकि, पुरानी कहावत है कि प्रेम आंख मूंदकर होता है और उसमें तर्कों की कोई गुंजाइश नहीं होती। लेकिन हाल के दिनों में सैकड़ों ऐसे प्रकरण सामने आए हैं जिनमें सोशल मीडिया के जरिये रिश्ते गांठकर सेना, वायुसेना व नौसेना के अधिकारियों व कर्मचारियों को किसी सुंदरी के जरिये पाकिस्तान से जासूसी के लिये इस्तेमाल किया जाता रहा है। यह गहन शोध का विषय है। हमने आजतक इस विषय को गम्भीरता से नही लिया है।

आजकल की पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर रही है। अंग प्रदर्शन, एशो–आराम, अवांछित स्वतंत्रता, आधुनिकता का दिखावा और अच्छे संस्कारो का अभाव और अनैतिकता और पैसे की प्रति अत्यधिक लगाव जैसी आदतें मुख्य कमजोरी बन गई है। संयुक्त परिवार की अवधारणा समाप्त होती जा रही है। लिहाज और शर्म की भावना लगभग खत्म हो गई है। कई बार ऐसा होता है, औरतें घर छोड़कर भाग जाती हैं। कभी अकेली ही तो कभी सहारे के लिए किसी के साथ, इसलिए नहीं कि उन्हें डराती हैं जिम्मेदारियां, उन्हें डराते हैं लोग और ले जाते हैं इस हद तक, कि तिनका–तिनका जोड़ा घर ही, उन्हें बेगाना लगने लगता है। बेगानी बस्ती से ज्यादा, वो घर जिसे बार–बार, उसे अपना बताया जाता है। जन्म लेने से मरने तक, जो कभी उसका होता ही नहीं, सास बनने तक सास का शासन, बहू के आने से पहले ही,घर छिन जाने का डर, उसे हर पल सताता है। जिस घर को उसे बार–बार उसका अपना बताया जाता है। इतना तो वह सह जाती है,पर जब गांठ बांधकर, हाथ थाम कर लाने वाला ही, कब पराया हो जाता है। गांठ खोलकर आलमारी में रख देता है, और हाथ पकड़कर, किसी और का हो लेता है, तब औरत, बेगानों को छोड़कर, बेगानी बस्ती की ओर निकल जाती है। इन घटनाक्रमों ने एक बार फिर से सोशल मीडिया की सामाजिकता को लेकर बहस तेज कर दी है।

हाल की दोनों घटनाओं को छोड़ भी दें तो देश में हजारों किस्से ऐसे हैं कि जिनमें सोशल मीडिया के जरिये लड़कियों से छल किया गया। उन्हें लूटा गया और उनकी हत्या तक कर दी गई। एक परिपक्व व्यक्ति के लिये सोशल मीडिया के गहरे निहितार्थ हैं। लेकिन छोटी उम्र में बहकने को भटकाव ही कहा जायेगा। वहीं वैवाहिक रिश्तों के दरकने को भारतीय समाज के लिये एक बड़ी चुनौती माना जाएगा। जो समाज में कई तरह की विकृतियों को जन्म दे सकता है। रिश्तों की पवित्रता को लेकर पश्चिमी जगत में जिस भारत की मिसाल दी जाती रही है आज वह ही रिश्तों के संक्रमण वाले दौर से गुजर रहा है। औरते तो रोज भागती हैं। पर उनके भागने में और बॉर्डर पार शादीशुदा औरत के भागने में बड़ा फर्क है। यह एक सामाजिक त्रासदी है। उच्छृंखलता नहीं। देश के लिए प्रेम त्यागा जा सकता है। प्रेम के लिए देश नहीं। ऐसे लोगों की चर्चा भी नहीं होनी चाहिए।क्या आज की कानून व्यवस्था से वह राजा–महाराजाओ और अंग्रेजों वाला कानून में फैसलों में देरी नहीं होना दंड प्रक्रिया के अंतर्गत तुरंत सजा देकर निस्तांतरण हो जाना आज के मुकाबले बेहतर लगता है। सामाजिक खाप पंचायतों/पंचो–पटैलो/मुखियाओं का विरोध विरोध हुआ उन्हें रूढ़िवादी, गैर परंपरागत, अमानवीय,और घृणित मानसिकता घोषित कर उन्हें बंद कराने के लिए कानून में महिला उत्पीडन के आधे अधूरे दावो पर कानूनो में संशोधन किया तो विसंगतिपूर्ण कानून ने महिलाओ को स्वछंद–स्वतंत्रत होने के ऐसे पंख लगा दिए गये। जिसके विकृत परिणाम स्वरूप ऐसे मामले लगातार सामने आते जा रहे हैं।

बिना शादी–संबंध के लड़के–लड़की एक जगह रह रहे हैं। यह व्यवस्था सामाजिक संस्थानों और संस्कृति के धज्जियां उडाने के लिए कानून जो बनाएं है यह उसकी बदहाली का एक रूप है। **डॉ. सत्यवान सौरभ**

युवाओं को ये क्या हो रहा है
खड़े सड़क पर धुआं उड़ा रहे।
ना लाज शर्म बरकरार रही
सरेआम हंसी के पात्र बन रहे ।
जो समझ रहे धुएं को शान हैं
वे तिरछी नजरों से निहारे जा रहे।
जहां खड़े हो जरा देखो दाएं बाएं भी
बचपन भी उन्हीं सड़कों पर घूम रहे।
याद नहीं क्या नौजवानों की तड़प
जवानी की थी कुर्बान उन्हें भूला रहे।
सोचो जरा उन माता–पिता के बारे में
जी तोड़ मेहनत कर तुम्हें पढ़ने भेज रहे।
उम्मीदें लगा कर बैठे बेचारे तुम ही से
क्यों उम्मीदें उनकी धुएं में उड़ा रहे।
माना आधुनिकता का चोला पहना है
पर क्यों सिगरेट की चिंगारी से उड़ा रहे।

सीमा रंगा इन्द्रा
हरियाणा

हृदय विदारक मुहावरे

जो पहले हृदय का चमकीला हार था,
वो अब बन गया काँटेदार नुकीले शूल।
जिसे छाती से हमेशा लगाए रखता था,
यह मेरी थी प्रथम सबसे बड़ी भूल।।
दुःख में हाथ मल कर, हाथ धो बैठा,
रात–दिन मार रहा हूँ अपना हाथ–पैर।
मेरा हाथ छोड़ा, हाथ का मैल समझ,
क्या किसी जन्म का था कोई बैर?
दिल भर आया, दिल बहुत बैठ गया,
बैठे हुए तोड़ रहा हूँ दिल के फफोले।
दिल में करार नहीं, दिल मसोस रहा,
दिल का गुबार बाहर हो रहे होले–होले।।
काला कलेजा वाली, खा रही कलेजा,
कलेजा पर साँप लोट रहे झुंड–के–झुंड।
कलेजा काँप रहा छलनी हो–हो कर,
धक से होकर कलेजा हुआ सूंड–मुंड।।
मन में बसने वाली, मन से उतर गयी,
मेरे मन के चोर, अब मन फट गया।
रो–रोकर माँगता रहा प्राणों की भीख,
निर्दयी प्राण–पखेरू उड़ा कर ले गयी।।

अशोक कुमार यादव
मुंगेली, छत्तीसगढ़



पौधों की निगरानी एवं संरक्षण आवश्यक

उत्तर प्रदेशने पौधरोपण महाअभियान 2023 के तहत एक दिन में 30 करोड़ पौधा लगाने के लक्ष्य के सापेक्ष 30 करोड़ 21लाख 51 हजार पौध लगाकर नया इतिहास रच दिया। पिछले वर्ष एक दिन में 25 करोड़ पौधे लगाये गये थे। प्रदेश में शनिवार को बड़े पैमाने पर पौधरोपण अभियान का शुभारम्भ हुआ। इस अभियान में विद्यार्थियों समेत आम जनमानस और जन प्रतिनिधियों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। नगर से लेकर ग्रामीणांचलों तक यह अभियान उत्सव के रूप में चला। इस दौरान स्कूलों, नहर की पटरियों, वनभूमि से लेकर न्यायालय परिसर तक हर जगह पौधे लगाया जाना पर्यावरण की स्वच्छता के प्रति लोगों की जागरुकता को दर्शाती है। सभी सरकारी विभागों, गैर सरकारी संघटन, धार्मिक, सामाजिक संस्थाएं और राज्य सरकार के उपक्रम सहित शिक्षण संस्थाओं का शामिल होना धरती को हराभरा बनाने की दिशा में बड़ा और सार्थक कदम है। पौधरोपण अभियान में प्रदेश के दोनों उप मुख्य मंत्रियों सहित सरकार के सभी मंत्रियों ने आवंटित जिलों में पौधे लगाये।

इस अवसर पर मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ का पौध रोपण के कीर्तिमान को नये भारत के नये उत्तर प्रदेश में 'पौधरोपण' लोक पर्व बताना उचित और सारगर्भित है। मानव जीवन के लिए वृक्षों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि वृक्षों से ही हमें जीवनदायी आक्सीजन प्राप्त होती है। वृक्ष वायुमंडल से घातक कार्बनडाई आक्साइड गैस को अवशोषित करते हैं और आक्सीजन का उत्सर्जन करते हैं जो मानव जीवन का मूल आधार है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए वृक्षों का अत्यधिक मात्रा में होना बहुत जरूरी है। इसके लिए पौधरोपण जितना जरूरी है, उससे कहीं ज्यादा जरूरी उसकी सुरक्षा और संरक्षण है। सरकार को इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसकी समुचित व्यवस्था और निगरानी सुनिश्चित की जानी चाहिए तभी पौध. रोपण का उद्देश्य होगा।

क्यों बढ़ रही शराब व सिगरेट की लत ?



युवतियों और महिलाओं में बीते कुछ सालों में सिगरेट व शराब का चलन बढ़ गया है। इस बारे में कई शोध जारी हैं। ज्यादातर में यह निष्कर्ष निकल कर आ रहा है कि अकेलापन, काम का तनाव और रिश्तों में खटास के कारण महिलाएं इन नशों की गिरफ्त में आ रही हैं। पटना के एक प्रमुख एंटी एडिक्शन सेंटर की डॉक्टर प्रतिभा कहती हैं कि ज्यादातर मामलों में लत अनजाने में लगती है। उनके मुताबिक कई बार लोगों को लगता है कि सब कुछ उनके कंट्रोल में है। उनको लत नहीं लगेगी, लेकिन ऐसा नहीं है। वह कहती हैं कि कई बार शराब और गांजा को लोग शौक–शौक में पहली बार यह सोचकर लेना शुरू करते हैं कि छोड़ देंगे, लेकिन फिर उसकी तलब लगने लगती है और वह लत में बदल जाती है। इन नशों की लत लगना जितना आसान है, इन्हें छोड़ पाना उतना ही मुश्किल होता है। किंग्स कॉलेज लंदन में प्रोफेसर शैली मार्लव का दावा है कि पुरुषों के मुकाबले महिलाएं लत की चपेट की कहीं जल्दी आ जाती हैं। वह अपना उदाहरण देते हुए कहती हैं कि 25 साल की उम्र में उन्हें भी लत लग गई थी, जिसके बाद उन्हें थेरेपी लेनी पड़ी। शैली मार्लव, जुआ और नशे की लत की शिकार महिलाओं की मदद करने की दिशा में काम कर रही हैं भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय के द्वारा जारी एक. आंकड़े के मुताबिक, साल 2018 में 18 से 75 उम्र वर्ग के 15 करोड़ से अधिक लोगों को शराब की लत थी। इसके अलावा लोग कई दूसरी लतों के भी शिकार थे। सरकार के इस आंकड़े से यह तो पता नहीं चलता कि इनमें महिलाओं की कितनी संख्या है, लेकिन ये आंकड़े चिंताजनक हैं। पटना की ही मनोवैज्ञानिक डॉक्टर बिंदा सिंह का मानना है कि किसी भी तरह की लत को लेकर महिलाओं में आज भी उतनी जागरुकता नहीं है।



डॉ. बिंदा के मुताबिक पटना, रांची, रायपुर, वाराणसी जैसे टीयर–टू शहरों में एडिक्शन की शिकायतें लेकर डॉक्टर के पास आने वाले पुरुषों और महिलाओं की संख्या में काफी अंतर है। एक औसत के मुताबिक हर 10 मरीज में से महिलाओं की संख्या सिर्फ एक है। वह यह भी कहती हैं कि दिल्ली, मंबई, लखनऊ, पुणे जैसे शहरों में यह औसत काफी ज्यादा है।

मैं असफल और नाकाम रहा!



मैं असफल और नाकाम रहा
गलतियां होती रही सफर में
लेकिन! ये मेरे जीवन का
परिमाप नहीं...!
परिभाषित नहीं चरित्र मेरा।
ओ त्रुटियों! भूल,चूक,गलतियों...!
सदा ही तुमने अपनाकर मुझकों
मानवता का दान दिया
जीवन परिपथ पर भटक जब
सुकर्म पुण्य की महत्ता भूल
चला उड़ाता फिरता धूल।
ओ विराट बेवकूफियों, नादानियों!
थामकर हाथ मेरा सदा तुमने
नित्य ही उपकार किया।
मिट रहा था अस्तित्व मेरा
फिर से आलोकित पथ की ओर धकेला।
पाखंड पथ था पाथेय हमारा
सत पथ जीवन सम्बल से अजान
चल रहे झूठ को अटल मानकर
फिर भी जहाज का पंछी नहीं बना
इतने सारे अपराध हमारे
फिर भी जीवन उपकार हुआ।
सद्भावना एकाकी कर्म ने
सब कुछ था तौल रखा।
मंतव्य न था परपीड़ा
न परजन दुःख आयोजन
अपने में एक सुंदर कर्म का
रहा मात्र आयोजन लक्ष्य।
मौन,मूक इस आयोजन में
विचलन का आना शुभ रहा
बाधक मनोविकार सुसृष्टि में लगे
अपराध भूल चूक गलती,नादानी
सबने अपने पक्ष तुलना में योग दिया
सुंदर पथ के सुकर्म में
सब परीक्षा लेने आते
दे जाते वचन अटल मौन ज्ञान वरदान।

ज्ञानीचोर
मु.पो. रघुनाथगढ़, सीकर राज.

कामगारों का एक बड़ा तबका बेरोजगार होकर बदहाली की कगार पर

पिछले तीन वर्षों में चीनी उद्योगपति जैक मा की सम्पत्ति में तीस अरब डालर की गिरावट दर्ज हुई है। इन तीन वर्षों में चीन के सबसे बड़े पांच उद्योगों की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत एक खरब डालर कम हुई है। चीन में इस समय जो हालात चल रहे हैं, उन्हें देखते हुए लगता नहीं कि आने वाले समय में यहां पर कोई उद्योग चलेगा। जानकार इन सबके पीछे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) को कारण बता रहे हैं। कुछ समय पहले तक चीन का सरकारी मीडिया, पार्टीके आला कमान, प्रशासन समेत उद्योग सैक्टर सभी जैक मा और उनके एंट ग्रुप को चीन का भविष्य बता रहे थे लेकिन अचानक बाजी पलट गयी और जैक मा पिछले पांच वर्षों में अपनी आधी कमाई गंवा बैठे। दरअसल तीन वर्ष पहले अक्तूबर 2020 में बंड समिट के दौरान 'जैक माने चीनी प्रशासन की आलोचना करते हुए चीन के बैंकिंग सैक्टर और वित्तीय संस्थानों के काम करने के तौर–तरीकों की आलोचना की थी और कहा था कि ये लोग काम करने लायक नहीं हैं।

इस घटना के बाद चीनी कम्युनिस्ट पार्टी खासी नाराज हुई थी। अपने इस बयान के बदले जैक मा को भारी आर्थिक नुकसान झेलना पड़ा था। दरअसल जैक मा के उस बयान के बाद चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के दबाव में आकर अलीबाबा की सहयोगी कम्पनी एंट ग्रुप को उस समय का दुनिया का सबसे बड़ा आईपीओ सस्पैंड करना पड़ा था।

जैक मा दुनिया का सबसे बड़ा इनिशियल पब्लिक आफर लेकर आ रहे थे जिससे सीपीसी को लगने लगा था कि जैक मा उनके हाथ से निकलते जा रहे हैं।

यदि एक बार ऐसा हो गया तो चीन का हर अमीर उद्यमी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के चंगुल से आजाद हो जायगा जो सीपीसी कभी नहीं चाहती थी। इसलिए कम्युनिस्ट पार्टी ने जैक मा को कुछ दिनों के लिए गायब कर दिया था। बादमें जैक मा लोगों के बीच आये तो उनमें पहलेवाली बात नहीं थी।

अलीबाबा और उसकी सहयोगी कम्पनियों को सीपीसी के दबाव में आकर अपनी आंतरिक संरचना में बदलाव करना और सरकार को जुर्माना भी देना पड़ा था।

पिछले सप्ताह एंट ग्रुप प्रबंधन ने यह घोषणा की कि वह अब अलीबाबा से अलग है और उसका इससे कोई संबंध नहीं है। लेकिन सीपीसी का लक्ष्य सिर्फ एंट समूह को सजा देना नहीं था, बल्कि इन जैसे कई दूसरे समूहों को यह बताना था कि सीपीसी के दायरे से बाहर जो भी जायगा, उसका हश्र जैक मा और अलीबाबा जैसा ही होगा।

इस कड़ी में पिछले सप्ताह सीपीसीने वित्तीय नियामक कारवाई करते हुए 7.12 अरब युआन का जुर्माना एंट ग्रुप पर लगाया। एक वैश्विक वित्तीय बाजार के आंकड़े बनाने वाली कम्पनी ने चीन के बारे में कहा कि पिछले दो वर्षों में चीन की बड़ी पांच तकनीकी बाहुबली कम्पनियों, जिनमें एंट ग्रुप, मेथ्वान, जेडी डॉट कॉम, अलीबाबा, बाईद और टेनसेंट आती हैं, परन्तु एकाधिकार नियामक कानून के नाम पर सीपीसी ने शिकंजा कसा और इन्हें कुल एक खरब दस अरब अमेरिकी डालर का नुकसान उठाना पड़ा। सीपीसीकी इस कारवाई के दौरान इन पांचों तकनीकी कम्पनियों के शेयर स्टॉक एक्सचेंज में 40 फीसदी से लेकर 71 फीसदी तक गिरते चले गये। इससे ढेर सारे रोजगार खत्म हुए, कई लोगों को अपने घर का खर्च चलाने के लिए लोगों के घरोंतक खाना पहुंचानेवाली कम्पनियों में औने–पौने में काम करना पड़ा, कुछ लोगों ने गली–नुक्कड़ पर खाने–पीने के सामान के खोमचे लगाने शुरू कर दिये तो दूसरी तरफ कामगारों का एक बड़ा तबका बेरोजगार होकर बदहाली की कगार पर आ गया लेकिन इससे चीन के हुक्मरानों पर कोई असर नहीं पड़ा।



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को देश की राजधानी प्रगति मैदान एग्जीबिशन कम कन्वेंशन सेंटर भारतीय मंडपम को (भारतीयों द्वारा अपने देश को दिया गया सुंदत्तम उपहार बताते हुए) राष्ट्र को किया समर्पित।

मराठा आरक्षण की मांग को लेकर प्रचंड प्रदर्शन

नई दिल्ली। दिल्ली के जंतर–मंतर पर मराठा आरक्षण की मांग को लेकर प्रचंड प्रदर्शन किया गया। लोगों ने कहा कि सामान्य मराठा समुदाय के मन में आरक्षण की आग अभी भी जल रही है। अखिल भारतीय मराठा महामसंग के अध्यक्ष दिलीप जगतब ने कहा कि वर्षों से महाराष्ट्र की राजनीति केवल सत्ता तक ही सीमित रही है, इसलिए मराठा समुदाय की कई मांगों को नज.रअंदाज किया गया है। 2014 में मराठा समुदाय के लिए आरक्षण की घोषणा की गई थी जिस पर बाद में उच्च न्यायालय में रोक लगा दी थी। उसके बाद महाराष्ट्र में 50 से अधिक विरोध रैलियां और 42 से अधिक आत्महत्याएं हुईं, 2019 में राज्य सरकार द्वारा फिर से आरक्षण की घोषणा की गई थी। लेकिन महाराष्ट्र राज्य में राजनीतिक संकट और सत्ता परिवर्तन के कारण नहीं हो सका। तभी से मराठा समुदाय आरक्षण के अधिकार से वंचित है।

मराठा संगठनों की शिकायत है कि वर्षों बीत गए लेकिन महाराष्ट्र में किसी भी सरकार ने मराठा आरक्षण के लिए गंभीर प्रयास नहीं किए।

अखिल भारतीय मराठा महासंघ के दिवंगत अध्यक्ष शशिकांत पवार ने तब कई विद्वानों और राजनेताओं से इस मुद्दे पर चर्चा की। जस्टिस गायकवाड़ आयोग की रिपोर्ट काफी सहायक रही। इसके बाद राज्य सरकार ने मार्गदर्शन के लिए न्यायमूर्ति दिलीप भोसले की अध्यक्षता में एक समिति की स्थापना की। इस समिति ने अपेक्षा के अनुरूप नवीन जानकारी एकत्र करने की अनुशंसा की। सर्वोच्च न्यायालय, और इसे न्यायमूर्ति गायकवाड़ समिति की रिपोर्ट का पूरक बनाया जाना चाहिए। हालांकि जस्टिस दिलीप भोसले समिति ने सिफारिशें दी हैं, लेकिन महाराष्ट्र



सरकार ने उस पर कोई गंभीर कदम नहीं उठाया है। इस बीच मराठा समुदाय के कई विद्वानों और युवाओं ने स्पष्ट रूप से समझ लिया है कि ओबीसी के भीतर 50प्रतिशत सीमा के तहत मराठों के लिए आरक्षण घोषित करने का एकमात्र विकल्प उपलब्ध है। यह मांग पहले अखिल भारतीय मराठा महासंघ ने रखी थी। अखिल भारतीय मराठा महासंघ ने 50प्रतिशत की सीमा के तहत आरक्षण की मांग की लेकिन महाराष्ट्र में कोई भी राजनीतिक नेता इस मुद्दे पर चर्चा नहीं करना चाहता। उनका मानना है कि यदि 50 प्रतिशत से कम आरक्षण दिया गया तो ओबीसी के साथ अन्याय होगा। समुदाय क्योंकि आबीसी में 366 जातियाँ हैं। समुदाय महाराष्ट्र और अन्य राज्यों में फैला हुआ है। राजनीतिक दलों के लिए यह एक राजनीतिक मुद्दा होगा . इसलिए सभी राजनीतिक दल मराठाओं को ओबीसी के तहत 50प्रतिशत की सीमा के तहत आरक्षण देने के लिए अनिच्छुक हैं। कोटा. आज के परिदृश्य में किसी भी राजनेता, राजनीतिक दल या सरकार में इस तरह के आरक्षण की घोषणा करने का साहस नहीं है।



राष्ट्रपति भवन द्वारा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सहयोग से स्थापित राष्ट्रपति भवन के मार्बल जनजातीय दर्पण गैलरी का राष्ट्रपति के रूप में 1 वर्ष के कार्यकाल को पूर्ण किए जाने के उपलक्ष में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उद्घाटन किया ।

राजस्थान युवा महोत्सव ब्लॉक भवानीमंडी में युवाओं ने किया अपनी कला का प्रदर्शन’

भवानीमंडी। राजस्थान युवा महोत्सव का ब्लॉक स्तरीय समारोह भवानीमंडी की जैन बोर्डिंग के सभागार में आयोजित किया गया। समारोह का शुभारंभ नगरपालिका अध्यक्ष कैलाश बोहरा,जन अभाव अभियोग निराकरण समिति राजस्थान सरकार में सदस्य राजेश गुप्ता करावन, सीताराम मीणा ए डी पी सी समग्र शिक्षा ब्लॉक शिक्षा अधिकारी दामोदर प्रसाद शर्मा ने माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलन करके किया। समारोह में 17 प्रकार की साहित्यिक सांस्कृतिक एवं लोककला से सम्बंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। बड़े ही उत्साह से 15 से 29 वर्ष के युवा प्रतिभागियों ने भाग लिया।समारोह के दौरान निर्णायक मौजूद रहे। प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए 3 निर्णायक नियुक्त किये गए।मंच संचालन प्रह्लाद नागर व्याख्याता व कृष्ण गोपाल वर्मा ने किया।अतिथि राजेश करावन ने सभी प्रतिभागियों को राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए भाग लेने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की युवा प्रतिभाओं को अपना हुनर का प्रदर्शन करने का मौका दिया है।भवानीमंडी ब्लॉक में 1000 ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन होने पर खुशी जाहिर की।

समापन समारोह के अतिथि तहसीलदार सत्यनारायण नरवारिया, नगरपालिका चेयरमैन कैलाश बोहरा, वाईस चेयरमैन अनिल मीणा, विनय आसतोलिया, हरीश राठौर वरुण मीणा, दामोदर प्रसाद सी बी ई ई ओ,त्व कल्याणमल जी मेघवाल,पीरूलाल जी वर्मा रहे। तथा ब्लॉक भवानीमंडी के प्राचार्य , प्र अ,अध्यापक व प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा 22 निर्णायको द्वारा अलग अलग विधाओं की प्रतियोगिता में प्रथम ,द्वितीय,तृतीय विजेताओं का निर्णय दिया सभी आतिथियो ने प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान पर आए प्रतियोगियों को प्रतीक चिन्ह व सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। व युवा महोत्सव ब्लॉक भवानीमंडी कार्यक्रम का समापन हुआ।





लक्ष्मी देवी शर्मा को मिली पीएचडी की उपाधि



अलवर शहर निवासी लक्ष्मी देवी शर्मा को राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय के द्वारा पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई । लक्ष्मी देवी शर्मा अग्रवाल समाज के प्रतिष्ठित मंदिर श्री ल क्ष्मीनारायण जी के आचार्य स्व.श्री श्रीधर शर्मा जी की पुत्री है ।लक्ष्मी ने अपना शोध कार्य अग्रसेन महिला महाविद्यालय खेरली, अलवर की प्राचार्य प्रोफेसर हेमा देवरानी के निर्देशन में पूर्ण किया है। इनका शोध विषय राजस्थानी और बुन्देलखण्डी लोकगीतों का तुलना. त्मक अध्ययन रहा ।प्रोफेसर हेमा देवरानी जी अब तक 23 शोध कार्य करवा चुकी है। लक्ष्मी शर्मा लोक कलाकार भी है। इन्होंने अनेक बार जयपुर दूरदर्शन एवं ई. टीवी राजस्थान पर अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं।इन्हें अब तक अनेक सम्मान भी प्राप्त हो चुके है जिनमे प्रमुख रूप से है अंतरराष्ट्रीय नारी शौर्य सम्मान, अंतरराष्ट्रीय पद्मा सम्मान, बाबा साहेब अम्बेडकर सम्मान, साहित्य सारथी रत्न सम्मान, शाश्वत सम्मान, आदर्श गुरु सम्मान ,काव्य प्रतिभा सम्मान, विश्व प्रतिभा अंतरराष्ट्रीय सम्मान।

लक्ष्मी अपनी सभी उपलब्धि का श्रेय अपने गुरु एवं परिवार को देती है परिवार में विशेष रूप से अपनी माता जी श्रीमती सुशीला शर्मा एवं भाई पदमनाभ शर्मा, बंशीधर शर्मा,बड़ी बहन पद्मा को देती हैं।

भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक हुआ



द्वारका, दिल्ली। समाचार निर्देश द्वारा द्वारका दिल्ली में भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ ।समाचार निर्देश के निदेशक आयोजक श्री मुकेश कुमार भोगल,सम्पादक कवयित्री सीमा रंगा इन्द्रा एवं सह सम्पादक डा.नाथू लाल लोटवाड़ा रहे । कवि सम्मेलन में देश के विभिन्न राज्यों से आए कवियों ने समाँ बांधा।अपनी प्रस्तुतियों द्वारा लोगों का मन मोह लिया ।कवियों का काव्य पाठ इतना मोहक था कि श्रोता स्थान पर बने रहे।कवि सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री सुरजीत जी आज़ाद,विशिष्ट अतिथि देवयानी मुखर्जी,डा.तरूणा सचदेवा,सुनील शर्मा रहे।पंजाब,हिमाचल प्रदेश, राजस्थान,उत्तर प्रदेश,मध्य प्रदेश, दिल्ली,हरियाणा से कवि सम्मेलन में हिस्सा लिया।

कवि सम्मेलन का लाइव प्रसारण समाचार निर्देश के स्टुडियो द्वारा किया गया ।समाज सेवी श्री मुकेश कुमार भोगल ने कवि सम्मेलन का आयोजन सुपुत्री तनु श्री भोगल के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में किया।भोगल जी समय समय पर ऐसे आयोजन करवाते चले आ रहें है । कार्यक्रम की शुरुआत हेमंत कुमार जी द्वारा गणेश वंदना और सरस्वती वंदना से हुई।सम्मेलन में सुप्रसिद्ध कवयित्री सीमा रंगा ने ‘मेरे सनम मेरे हमदम,डा.नाथू लाल लोटवाड़ा ने ग़ज़ल बहुत टूटा हुआ हूँ मैं ’ , वरिष्ठ साहित्यकार प्रेम सागर ने ‘मेरे वतन ‘देश प्रेम की ग़ज़ल ,मनोज फगवाड़िया ने मोहब्बत नाम मेरा,पवन शर्मा ने गीत ,शकुंतला शकुन ने लक्ष्मण शक्ति,अशोक भारद्वाज ने प्रेम मुक्तक,डा.संगीता शर्मा ने स्त्री विमर्श,गीता राघव ने भोर की किरण,रामेश्वर देव ने ग़ज़ल मेरा वो ध्यान रखता है,राधे स्याम मेहरा ने पड़ोसन की तरुणाई,सिंह भदोरिया ने हिंसा,मनोज मधुर ने प्रेम ,जय सिंह जीत ने प्रेम ग़ज़ल, आलोक अजनबी ने ज़रूरत क्या है,सुरेंद्र सागर ने प्रेम ग़ज़ल,राज ख्यालिया ने सामयिक विषय,डा.स्मर्ति कुलश्रेष्ठ ने प्रेम मुक्तक,सोनू संजीदा ने ग़ज़ल,खुशबू जैन ने प्रेम मुक्तक,साहिल सिगला ने मुक्तक,निशु नागपाल ने शेर, संगीता गीत ने मुक्तक,रश्मि श्री ने नारी सशक्तिकरण,डा. चन्द्र दत्त ने हास्य पीयूष गोयल ने पुस्तकों का अन. ावरण ,कमलेश कुमार ने हास्य व्यंग्य,राजपाल कुंज पुरा ने प्रेम ग़ज़ल ,कौशल समीर ने शेर सुनाकर सबका मन मोह लिया।कवि सम्मेलन मंच संचालन डा.नाथू लाल लोटवाड़ा ने किया।श्री मुकेश कुमार भोगल ने सभी का धन्यवाद किया एवं भविष्य में ऐसे खूबसूरत आयोजन करवाने का वादा किया।

बादल और बच्चे



सावन का आठवाँ दिन था। सुबह की स्वर्णिम धूप बड़ी रमणीय थी। दोपहर होते तक वातावरण उमस हो गया। शाम तक नीलगगन में बदली छा गयी। अंधेरी रात और अधिक घनी होने लग गयी। मध्य रात को तेज हवा चलने लगी। आकाश में छाए बादलों के टुकड़े हिलने–डुलने लगे। न चाहते हुए भी उन्हें इधर–उधर होना पड़ा। अब तो बस तीन टुकड़े ही रह गये। दो बड़े और एक बहुत ही छोटा टुकड़ा। फिर तीनों टुकड़े भी उड़ने की तैयारी कर रहे थे, तभी छोटे टुकड़े बादल ने कहा– "पापा जी ! मैं यहाँ अकेला नहीं रहूँगा। मैं भी जाऊँगा आप दोनों के साथ।" "नहीं बेटा ! तुम अभी बहुत छोटे हो। हवा भी तेज चल रही है। पता नहीं, हमारा कहाँ जाना होगा। तुम यहीं इधर–उधर होकर अपना समय बिताओ।" पापा बादल ने अपने बेटे छोटकू बादल को समझाया। "नहीं जी, हम अपने बेटे को यहाँ अकेले नहीं छोड़ेंगे। आजकल हवा बहुत मनचली हो गयी है। उसका कोई ठिकाना नहीं है। इसे कब और कहाँ उड़ा कर ले जाय।" इससे अच्छा हम इसे अपने साथ ले चलते हैं।" मम्मी बादल बोली। आखिर छोटकू बादल का मम्मी–पापा के साथ जाना तय हो ही गया। तीनों बादल रातभर आकाश में उड़ते रहे। जंगल, झाड़ी, नदी, पहाड़–पर्वत से होकर एक गाँव में पहुँचे ; तब तक सुबह भी हो गयी। गाँव वाले अपने–अपने काम में व्यस्त थे। तभी अचानक बादलों की नजर मैदान में खेल रहे बच्चों पर पड़ी। बच्चे उन्हें बड़े प्यारे लगे। जरा रुके; और उन्हें खेलते हुए देखने लगे। फिर वहाँ से उनकी चलने की तैयारी हो ही रही थी कि छोटकू बादल बोला– "पापा जी ! मम्मी जी ! मैं यहीं रुक जाऊँ क्या? इनके साथ मेरा खेलने का मन कर रहा है। इन्हें मैं अपना मित्र बना लूँ ?" "तुम भी न...!" पापा बादल ने मुस्कुराते हुए कहा। "ठीक है बेटा। पर इन बच्चों के पास मत जाना। वे डिस्टर्ब होंगे। यहीं से तुम उन्हें देखते रहना; और यहीं आसपास ही रहना। यहाँ से कहीं और दूसरी जगह बिल्कुल नहीं जाना।" मम्मी बादल छोटकू के पास जाकर बोली। फिर मम्मी–पापा दोनों वहाँ से चले गये। शोरगुल करते हुए बच्चे अपने में बड़े मस्त थे। उन्हें किसी से कोई मतलब नहीं था। मैदान के चारों ओर हरियाली थी। नीला आकाश बड़ा सुंदर लग रहा था। खेलते हुए बच्चों को देख छोटकू बादल का उनसे मिलने का मन कर रहा था। पर उसे अपने मम्मी–पापा की हिदायत याद थी। आखिर बच्चा बच्चा ही होता है। मन सच्चा भी होता है; और कच्चा भी। अब उससे नहीं रहा गया। उसने आवाज लगायी– "मित्रों !" बच्चों ने एक अपरिचित आवाज सुनी। वे इधर–उधर देखने लगे। तभी अचानक उनकी नजर ऊपर आकाश की ओर गयी। उन्हें एक छोटा सा बादल दिखाई दिया। फिर एक ने पूछा– "कौन...?" "मैं छोटकू बादल हूँ।" ऊपर से आवाज आयी। "छोटकू बादल ! कौन छोटकू बादल ?" बच्चों को आश्चर्य हुआ। "तुम सभी जैसा मैं भी एक बादल बच्चा हूँ।" छोटकू बादल बोला। "तो तुम क्या चाहते हो हमसे ?" बच्चे बोले। "मैं तुम सब से दोस्ती करना चाहता हूँ। मुझे भी अपना दोस्त बना लो। मैं तुम सब के साथ खेलना चाहता हूँ। छोटकू बादल ने अपनी मन की बात कही। "यह कैसे हो सकता है ?" बच्चों का अचम्भित स्वर निकला। "हो सकता है मेरे मित्रों। देखो... ना गर्मी भी बढ़ रही है। तुम सब तक मेरे पहुँचने से वातावरण में नमी आयेगी। हल्की सी बारिश होगी। और फिर बारिश में भीगते हुए खेलने में बड़ा मजा आएगा।" छोटकू बादल के मन में बड़ा उतावलापन था। "बारिश होगी तुम्हारे आने से; हम सबको बहुत मजा आएगा। वो कैसे भाई ?" कुछ समय तक बच्चे खामोश रहे। आपसी सलाह–मशविरा हुआ; और फिर सबने हामी भर दी। छोटकू बादल के धरती पर आते ही बच्चे खुशी से झूम उठे। खूब नाचे–कूदे। खूब किलकारी गूँजी। देखते ही देखते शाम होने लग गयी। वे अपने–अपने घर लौटने की तैयारी कर रहे थे, तभी छोटकू बादल ने उनसे कहा–"मित्रों ! कल और आना।" "ठीक है। पर अब तुम क्या करोगे ? कहाँ जाओगे ?" दो–तीन बच्चों ने पूछा। "देखो मित्रों, वातावरण में फिर ऊष्णता आ रही है। मैं अब वाष्प बनकर ऊपर जाऊँगा। मेरा अपने जल रूप से वाष्प बनना ही वाष्पीकरण है।" कहते ही छोटकू बादल का पानी से वाष्प बनना शुरू हुआ। "अच्छा मित्र ! अब हम लोग भी चलते हैं। सी यू अगैन टुमॉरो। बॉय।" कहते हुए बच्चे घर लौट गये। इस तरह दूसरे दिन से रोज बच्चों और छोटकू बादल का मिलना–जुलना और खेलना–कूदना चलने लगा। छोटकू बादल और बच्चों की मित्रता प्रगाढ़ होती गयी। बच्चे बढ़ने लगे। छोटकू बादल का आकार भी बढ़ने लगा।छोटकू बादल को वहाँ से जाना उचित नहीं लगा। आसपास का क्षेत्र उसका निवास–स्थल हो गया। पूरे क्षेत्र में अच्छी बारिश होने लगी। खूब पेड़–पौधे उगने लगे। मिट्टी का कटाव बंद होने लगा। बारिश का पानी पर्याप्त मात्रा में जगह–जगह एकत्रित होने लगा; जिससे भूमि का जलस्तर बढ़ने लग गया। नदी–नाले, पोखर, कूप–सरोवर, जलपम्प सब लबालब होने लगे। लोगों को लगने लगा कि पेड़–पौधे अच्छी वर्षा होने में सहायक होते हैं। पानी और बारिश का महत्त्व लोग समझने लगे। जगह–जगह बांध बनवाये जाने लगे। वृक्षारोपण का काम युद्ध स्तर पर होने लगा। अनावश्यक जलप्रवाह की रोकथाम की जाने लगी। कृषि उपज में वृद्धि होने लगी। पूरे अंचल में हरियाली व्याप्त होने लगी। सुख–समृद्धि बढ़ने लगी। लोगों का जीवन ही बदल गया।

टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"
घोटिया–बालोद (छत्तीसगढ़)

क्यों नारी लूट रही है

(शेर)– कब खत्म होगी दरिंदगी, इस देश में नारी के साथ।
कब होंगे बन्द जुल्मो– अन्याय, इस देश में नारी के साथ।।
नोचा जा रहा है सरेआम बदन, नारी का हिंदुस्तान में।
देखो कितनी हैवानियत हुई है, मणिपुर में नारी के साथ।।
हे राम तेरे देश में, क्यों नारी लूट रही है।
मानवता क्यों शर्मसार, नीलाम हो रही है।।
हे राम तेरे देश में––––––––।।

नारी के तन को भेड़िये, सरेआम नोंच रहे हैं।
खामोश होकर मर्द, वहशीपन को देख रहे हैं।।
मर्दों की कायरता पर, यहाँ नारी रो रही है।
हे राम तेरे देश में ––––––––।।

देवी के रूप में जहाँ पर, नारी को पूजा जाता है।
नारी पे अत्याचार वहाँ, क्यों ऐसे किया जाता है।।
नारी के प्रति दया– शर्म, क्यों खत्म हो रही है।।
हे राम तेरे देश में ––––––––।।

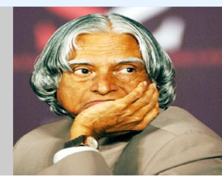
प्यार और दहेज में, जलाई जाती है नारी।
रिवाजों और प्रथाओं में, कुर्बान होती है नारी।।
नारी की हत्या– बिक्री की, साजिशें हो रही है।
हे राम तेरे देश में ––––––––।

बढ़ती ही जा रही है, घटनाएं ऐसी देश में।
कितने और बनेंगे, मणिपुर अपने देश में।।
सिर्फ राजनीति नारी के, जुल्मों पे हो रही है।
हे राम तेरे देश में ––––––––।।



गुरुदीन वर्मा उर्फ जी.आज़ाद
तहसील एवं जिला– बारां(राजस्थान)

जीवन की चुनौतियों का डटकर सामना किया एपीजे अब्दुल कलाम ने



डॉ एपीजे अब्दुल कलाम जो भारत के पूर्व राष्ट्रपति भी रह चुके है और जिनका पूरा नाम अवुल पकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम है। वह भारत के महान वैज्ञानिक और राजनीतिज्ञ थे। इन्होनें भारत के मिसाइल और परमाणु हथियार कार्यक्रमों में अहम भूमिका निभाई। भारत के परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में अहम किरदार निभाने के कारण अब्दुल कलाम जी को "भारत का मिसाइल मैन" भी कहा जाता है।

डॉ एपीजे अब्दुल कलाम प्रारंभिक जीवनः अब्दुल कलाम जी का जन्म तमिलनाडु में रामेश्वरम के तमिल मुस्लिम परिवार में 15 अक्टूबर 1931 को हुआ था। इनके पिता का नाम जैनलाब्दीन था जो पेशे से नावों को किराये पर देने और बेचने का काम करते थे। कलाम के पिता अनपढ़ थे पर उनके विचार आम सोच से कही उपर थी। वह उच्च विचारों के धनी व्यक्ति थे और अपनी सभी बच्चों को उच्च शिक्षा देना चाहते थे। इनकी माता का नाम असीम्मा था जो एक घरेलू गृहिणी थी।

अब्दुल कलाम कुल पांच भाई बहन थे जिसमें तीन बड़े भाई और एक बड़ी बहन थी। जब अब्दुल कलाम का जन्म हुआ तब इनका परिवार गरीबी से जूझ रहा था। परिवार की मदद करने के लिए डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने छोटी सी उम्र में ही अखबार बेचने का काम शुरू कर दिया था।

स्कूल के दिनों में वह पढ़ाई में सामान्य थे परन्तु नई चीजों को सीखने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। चीजों को सीखने के लिए वह हमेशा तैयार रहते थे और घंटों पढ़ाई किया करते थे। गणित विषय इनका मुख्य और रूचि वाला विषय था।

कलामजी की प्रारंभिक शिक्षा Schwartz Higher Secondary School रामानाथपुरम, तमिलनाडु से मैट्रिक की शिक्षा प्राप्त की। स्कूल के दिनों में वह अपने एक शिक्षक से बहुत ज्यादा प्रभावित थे जिनका नाम अयादुरै सोलोमन था। उनके शिक्षक का मानना यह था कि ख्वाहिश, उम्मीद और यकीन को हमेशा अपने जीवन में रखना चाहिए। इन मूल मंत्रों पर काबू करना बहुत जरूरी है। इन तीन मूल मंत्रों के कारण आप अपनी मंजिल को बिना किसी परेशानी के पा सकते है। इन मूल मंत्रो को अब्दुल कलाम जी ने अपने आखरी समय तक अपने जीवन में कायम रखा। अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज से 1954 भौतिक विज्ञान में बी0एस0सी की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद 1955 में वह मद्रास चले गये। कलाम जी को लड़ाकू पायलट बनना था जिसके लिए उन्होनें Institute of Technology in Aerospace Engineering में शिक्षा ग्रहण की परन्तु परीक्षा में उन्हें नौवां स्थान मिला जबकि आईएएफ ने आठ परिणाम घोषित किये जिसके कारण वह सफल नहीं हो पायें।

स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम एक प्रोजेक्ट पर काम करने लगे थे और प्रोजेक्ट इंचार्ज ने रॉकेट के मॉडल मात्र तीन दिन में पूरा करने का समय दिया था और साथ में यह भी कहा था कि अगर यह मॉडल ना बन पाया तो उनकी स्कॉलरशिप रद्द हो जायेंगी।

फिर क्या था? अब्दुल कलाम जी ने न रात देखी, ना ही दिन देखा, ना भूख देखी, ना ही प्यास देखी। मात्र 24 घंटे में अपने लक्ष्य को पूरा किया और रॉकेट का मॉडल तैयार कर दिया। प्रोजेक्ट इंचार्ज को विश्वास नहीं हुआ कि यह मॉडल इतनी जल्दी पूरा हो जायेंगा। उस मॉडल को देखकर प्रोजेक्ट इंचार्ज भी आश्चर्यचकित हो गए थे। इस प्रकार डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने अपने जीवन की कई चुनौतियों का डटकर सामना किया। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद कलाम ने रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन में एक वैज्ञानिक के रूप में शामिल हुए। इन्होनें प्रसिद्ध वैज्ञानिक विक्रम साराभाई के साथ भी काम किया। 1969 में डॉ एपीजे अब्दुल कलाम इसरो (ͥेͬ) आ गये और वहां पर इन्होनें परियोजना निर्देशक के पद पर काम किया।

इसी पद पर काम करते समय भारत का प्रथम उपग्रह रोहिणी पृथ्वी की कक्षा में वर्ष 1980 में स्थापित किया गया। इसरो में शामिल होना डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के लिए बहुत ही सौभाग्य की बात थी क्योंकि उनको ऐसा लगा कि जिस उद्देश्य के लिए वह जी रहे है उनका वह उद्देश्य पूरा होने लगा है। वर्ष 1963–64 में अब्दुल कलाम ने अमेरिकी संगठन नासा (छ॰।) में भी दौरा किया। भारत के प्रसिद्ध परमाणु वैज्ञानिक राजा रमन्ना ने पहला परमाणु परीक्षण किया जिसमें कलाम जी को परीक्षण करने के लिए बुलाया गया।

1970–1980 के दशक में डॉ अब्दुल कलाम अपने कार्यो की सफलता के कारण देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक बन गये और ख्याति बढ़ने के कारण उस समय की प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी ने अपने केबिनेट की मंजूरी के बिना ही कुछ गुप्त कार्यों के लिए अनुमति दी थी।

चंद्रशेखर आजाद और निशानेबाजी का शौक

चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई, 1906 को मध्यप्रदेश के भाबरा गांव में हुआ था। उनके सम्मान में अब इस गांव का नाम बदलकर चंदशेखर आजाद नगर कर दिया गया है। मूल रूप से उनका परिवार उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के बदरका गांव से था, लेकिन पिता सीताराम तिवारी को अकाल के कारण अपने पैतृक गांव को छोड़कर मध्यप्रदेश के भाबरा का रुख करना पड़ा। यह भील जनजाति बहुल इलाका है और इसी वजह से बालक चंद्रशेखर को भील बालकों के साथ धनुर्विद्या और निशानेबाजी करने का खूब मौका मिला और निशानेबाजी उनका शौक बन गया।

बालक चंद्रशेखर बचपन से ही विद्रोही स्वभाव का था . पढ़ाई से ज्यादा उनका मन खेल गतिविधियों में लगता था इसके बाद वह घटना घटी जिसने पूरे हिंदुस्तान को हिला कर रख दिया। जलियांवाला बाग हत्याकांड ने बालक चंद्रशेखर को झकझोर कर रख दिया और उन्होंने ईंट का जवाब पत्थर से देने की ठान ली।

मेरा नाम आजाद है

वैसे तो पण्डित चंद्रशेखर तिवारी को उनके दोस्त पंडितजी, बलराज और क्विक सिल्वर जैसे कई उपनामों से बुलाते थे, लेकिन आजाद उपनाम सबसे खास था और चंद्रशेखर को पसंद भी था। उन्होंने अपने नाम के साथ तिवारी की जगह आजाद लिखना पसंद किया. चंद्रशेखर को जाति बंधन भी स्वीकार नहीं था. आजाद उपनाम कैसे पड़ा, इस सम्बन्ध में भी एक रोचक उपकथा विख्यात है। हालांकि इस कथा का पंडित जवाहर लाल नेहरू ने जिक्र किया है लेकिन यह शुरूआती दौर से ही उनके बारे में सुनीकृसुनाई जाती रही है।

हुआ यूं कि 1921 में असहयोग आंदोलन अपने चरम पर था और बालक चंद्रशेखर एक धरने के दौरान गिरफ्तार कर लिया गया और मजिस्ट्रेट के सामने हाजिर किया गया. पारसी मजिस्ट्रेट मिस्टर खरेघाट अपनी कठोर सजाओं के लिए जाने जाते थे।

उन्होंने कड़क कर चंद्रेशेखर से पूछा

क्या नाम है तुम्हारा?

चंद्रशेखर ने संयत भाव से उत्तर दिया.

मेरा नाम आजाद है.

मजिस्ट्रेट ने दूसरा सवाल किया.

तुम्हारे पिता का क्या नाम है?

आजाद का जवाब फिर लाजवाब था

उन्होंने कहा मेरे पिता का नाम स्वाधीनता है।

एक बालक के उत्तरों से चकित मजिस्ट्रेट ने तीसरा सवाल किया–

तुम्हारी माता का नाम क्या है?

आजाद का जवाब था भारत मेरी मां है और जेल खाना मेरा घर है।

बस फिर क्या था गुस्साए मजिस्ट्रेट ने चंद्रशेखर को 15 बेंत लगाने की सजा सुना दी. बालक चंद्रशेखर को 15 बेंत लगाई गई लेकिन उन्होंने उफ्फ तक न किया. हर बेंत के साथ उन्होंने भारत माता की जय का नारा लगाया. आखिर में सजा भुगतने के एवज में उन्हें तीन आने दिए गए जो वे जेलर के मूंह पर फेंक आए। इस घटना के बाद लोगों ने उन्हें आजाद बुलाना शुरू कर दिया।

क्रांति का शुरूआत

जलियांवाला बाग कांड के बाद चंद्रशेखर को समझ में आया कि आजादी बात से नहीं बंदूक से मिलेगी. हालांकि उन दिनों महात्मा गांधी और कांग्रेस का अहिंसात्मक आंदोलन अपने चरम पर था और पूरे देश में उन्हें भारी समर्थन मिल रहा था। ऐसे में हिंसात्मक गतिविधियों के पैरोकार कम ही थे। चंद्रशेखर आजाद ने भी महात्मा गांधी द्वारा चलाए जा रहे असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया और सजा पाई लेकिन चौरा–चौरी कांड के बाद जब आंदोलन वापस लिया गया तो आजाद का कांग्रेस से मोहभंग हो गया, चंद्रशेखर आजाद ने बनारस का रुख किया.



बनारस उन दिनों भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र हुआ करता था. बनारस में वह देश के महान क्रांतिकारी मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी के सम्पर्क में आए. इन नेताओं से वे इतने प्रभावित हुए कि वे क्रांतिकारी दल हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ के सदस्य बन गए. इस दल ने शुरू में गांवों के उन घरों को लूटने की कोशिश की जो गरीब जनता का खून चूस कर पैसा जोड़ते थे लेकिन दल को जल्दी ही समझ में आ गया कि अपने लोगों को तकलीफ पहुंचा कर वे जनमानस को कभी अपने पक्ष में नहीं कर सकते थे. दल ने अपनी गतिविधियों को बदला और अब उनका उद्देश्य केवल सरकारी प्रतिष्ठानों को नुकसान पहुंचा कर अपनी क्रांति के लक्ष्यों को प्राप्त करना बन गया. दल ने पूरे देश को अपने उदृश्यों को परिचित करवाने के लिए अपना मशहूर पैम्फलेट द रिवाल्यूशरी प्रकाशित किया. इसके बाद उस घटना को अंजाम दिया गया, जो भारतीय क्रांति के इतिहास के अमर पन्नों में सुनहरे हर्फों में दर्ज है– काकोरी कांड.

काकोरी कांड और कमांडर इन चीफ

काकोरी कांड से कौन नहीं परिचित है जिसमें देश के महान क्रांतिकारियों रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी और ठाकुर रोशनसिंह को फांसी की सजा सुनाई गई थी. दल के दस सदस्यों ने इस लूट को अंजाम तक पहुंचाया और अंग्रेजों के खजाने को लूट कर उनके सामने चुनौती पेश की. इस घटना के बाद दल के ज्यादातर सदस्य गिरफ्तार कर लिए गए. दल बिखर गया, आजाद के सामने एक बार फिर दल खड़ा करने का संकट आ गया. कई प्रयासों के बावजूद अंग्रेज सरकार उन्हें पकड़ने मे असफल रही थी. इसके बाद छुपते–छुपाते आजाद दिल्ली पहुंचे जहां के फिरोजशाह कोटला मैदान में सभी बचे हुए क्रांतिकारियों की गुप्त सभा आयोजित की गई. इस सभा में आजाद के अलावा महान क्रांतिकारी भगतसिंह भी शामिल हुए. तय किया गया कि एक नये नाम से नये दल का गठन किया जाए और क्रांति की लड़ाई को आगे बढ़ाया जाए. नये दल को नाम दिया गया–हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशना. आजाद को इसका कमाण्डर इन चीफ बनाया गया. संगठन का प्रेरक वाक्य बनाया गया–हमारी लड़ाई आखिरी फैसला होने तक जारी रहेगी और वह फैसला है जीत या मौत।

सांडर्स की हत्या और असेम्बली में बम

दल ने सक्रिय होते ही कुछ ऐसी घटनाओं को अंजाम दिया कि अंग्रेज सरकार एक बार फिर उनके पीछे पड़ गई। लाला लाजपत राय की मौत की बदला लेने के लिए भगतसिंह ने सांडर्स की हत्या का निश्चय किया और चंद्रशेखर आजाद ने उनका साथ दिया। इसके बाद आयरिश क्रांति से प्रभावित भगतसिंह ने असेम्बली में बम फोड़ने का निश्चय किया और आजाद ने फिर उनका साथ दिया. इन घटनाओं के बाद अंग्रेज सरकार ने इन क्रांतिकारियों को पकड़ने में पूरी ताकत लगा दी और दल एक बार फिर बिखर गया. आजाद ने भगतसिंह को छुड़ाने की कोशिश भी की लेकिन सफलता हाथ नहीं लगी। जब दल के लगभग सभी लोग गिरफ्तार हो चुके थे, तब भी आजाद लगातार ब्रिटिश सरकार को चकमा देने मे कामयाब रहे थे।

अल्फ्रेड पार्क और आजाद योद्धा

अंग्रेज सरकार ने राजगुरू, भगतसिंह और सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई और आजाद इस कोशिश में थे कि उनकी सजा को किसी तरह कम या उम्रकैद में बदलवा दी जाए। ऐसे ही एक प्रयास के लिए वे इलाहाबाद पहुंचे. इसकी भनक पुलिस को लग गई और जिस अल्फ्रेड पार्क में वे थे, उसे हजारो पुलिस वालों ने घेर लिया और उन्हें आत्मसमर्पण के लिए कहा लेकिन आजाद ने लड़ते हुए शहीद हो जाना ठीक समझा।

उनका अंतिम संस्कार भी अंग्रेज सरकार ने बिना किसी सूचना के कर दिया. लोगों को मालूम चला जो लोग सड़कों पर उतर आए, ऐसा लगा जैसे गंगा जी संगम छोड़कर इलाहाबाद की सड़कों पर उतर आई हों। लोगों ने उस पेड़ की पूजा शुरू कर दी, जहां इस महान क्रांतिकारी ने अतिम सांस ली थी। उस दिन पूरी दुनिया ने देखा कि भारत ने अपने हीरो को किस तरह अंतिम विदाई दी है।

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु एक कदम साथ चले

नई दिल्ली। प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु जारी अपने अभियान के तहत हिंदी दिवस के पूर्व दिनांक 13.09.2023 को दोपहर 12.00 बजे इंडिया गेट से राजघाट दिल्ली तक पदयात्रा आयोजित कर रही है। प्रेरणा इस अभियान में कवि साहित्यकार समाजसेवी पत्रकार शिक्षाविद व आमजन को जोड़ रही है। प्रेरणा हिंदी प्रचार प्रसार का काम कर रही है और सभी भाषाओं का समान सम्मान करती है। प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा के इस अभियान में रचनाकारों की भूमिका महत्वपूर्ण है..... अंग्रेजों से लोहा लेने में भी कवियों व कवयित्रियों की ऐतिहासिक पहल रही है और आज हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु यही वर्ग कार्य कर रहा है।प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा के हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु पदयात्रा अभियान में दिल्ली की सुप्रसिद्ध कवयित्री सीमा रंगा इन्द्रा ने प्रचार अभियान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा के संस्थापक कवि संगम त्रिपाठी, प्रेरणा स्रोत डॉ धर्म प्रकाश वाजपेयी जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ लाल सिंह किरार, महासचिव प्रदीप मिश्रा अजनबी व सलाहकार डॉ विजय कुमार ने समस्त प्रबुद्ध वर्ग से इस अभियान में शामिल होने का अनुरोध किया है।

सीमा रंगा इन्द्रा

कोई अंधा, कोई पागल हुआ किसी की जुबान गई तो किसी की स्मरण शक्ति

यश चोपड़ा उन चंद फिल्मकारों में से एक हैं जिन्होंने 80 की उम्र में भी वहां पर को मात देते हुए बेहतरीन फिल्मों का निर्माण किया रमेश सिप्पी भी उन्हीं फिल्मकारों में से एक माने जाते हैं और अगर बात अभिनेताओं के बारे में की जाए तो अमिताभ बच्चन आजा 30 वर्ष के हो चुके हैं पर उनकी तंदुरुस्ती दे खकर उनकी असली उम्र की गाना कभी नहीं लगती जिस उम्र में इंसान चलना लगभग मुश्किल हो जाता है उस उम्र में कुछ कलाकारों ने दर्शकों का मनोरंजन किया यहां पर हम कुछ ऐसे कलाकारों की चर्चा करना चाहेंगे जिनके दर्दनाक जानकर उठेगी।









बहुत बुरा लगता है जब हम अपना पसंदीदा कलाकारों को वह होकर मरता हुआ देखते हैं परंतु ऐसे में यह कलाकार मानसिक शारीरिक त्राहि से परेशान होता है और दर्शक भी उसकी पीड़ा से एकाकार हो जाते।

1– रहमान– उनकी संवाद अदायगी और कलाकारी क्या आज भी कोई तोड़ नहीं मिला इनकी आवाज में ऐसी खनकती की गहरी नींद में सो रहा है इंसान भी उठ कर खड़ा हो जाएगा।

बतौर नायक कैरियर की शुरुआत करने वाले रहमान खलनायक की वाले किरदार में इतने रंग है कि उन्हें बेहद ही संभाल किसी सकारात्मक किरदार में दर्शकों ने देखा होगा। भगवान के घर में खूबसूरती और आवाज तोहफे के रुप में मिली थी दुर्भाग्य यह था कि उनके आखिरी दिनों में इसी आवाज ने उनका साथ छोड़ दिया उन्हें गले के कैंसर में इस तरह से जकड़ लिया कि वे अपने मुंह से एक भी नहीं निकाल पाए। वह एक खतरनाक चेनस्मोकर और शराबी थे। गले का कैंसर होने के बाद भी रहमान ने अपने अंतिम दिनों में सिगरेट और शराब पीना नहीं छोड़ा।

2– प्रेमनाथ– इन्होंने अपने जीवन में नायक से लेकर खलनायक तक के सभी किरदार निभाए थे काफी कम लोग जानते हैं कि प्रेमनाथ अपने जीवन के अंत समय में मनो रूप से परेशान थे। इनका देहावसान 3 नवंबर 1992 में हुआ था लेकिन अंतिम 12 वर्षों में उन्होंने यह कोई फिल्म नहीं किया। 1980 के बाद जो भी फिल्म में उनकी रिलीज हुई उनका फिल्मांकन पहले ही हो चुका था।

12 वर्षों तक फिल्म जगत से दूर रहने का मुख्य कारण उनकी मानसिक स्थितिया रही। इस जमाने में उनके नाम से ही फिल्में हिट हो जाती है परंतु शादी के बाद उनकी किस्मत पलट गई। उनकी फिल्में लगातार फ्लॉप होने लगे वह कर्ज में डूब गए इसके अलावा उनके दोनों भाइयों राजेंद्र नाथ और नरेंद्र नाथ की आर्थिक स्थिति भी काफी कमजोर हो चुकी थी। साथ ही साथ उनके दोनों बेटे प्रेम और मोंटी भी फिल्म जगत में फ्लॉप साबित हुए। चारों तरफ से मिलने वाली नाकामियों की वजह से यह अभिनेता पूरी तरह से टूट गया था।

3– प्राण– अपने जीवन में राम को खलनायक की की सभी गाड़ियों से जुड़ने का मौका मिला था । निसंदेह वह एक महान कलाकार थे बुढ़ापे के कारण अपने शरीर पर ध्यान देना भूल गए जिसका परिणाम यह निकला कि वह बहुत सी बीमारियों के शिकार हो गए वह भी यह एक चेनस्मोकर थे। शारीरिक समस्याओं के कारण 90 के दशक में फिल्मों से संन्यास लेना पड़ा अस्पताल में उनका इलाज यूं तो चल रहा था परंतु सबसे बड़ी समस्या तब उत्पन्न हुई जब उनके स्मृति शक्ति ने उनका साथ छोड़ दिया उन्हें अपने बारे में कुछ भी याद नहीं रहा और ऐसे ही स्थिति में उनका देहावसान हो गया।

4– के.एन.सिंह– कहा जाता है कि पेंशन अपने आंखों से भी ज्यादा करते थे उनकी आंखों के कारण फिल्मकारों ने उन्हें ढेर सारे किरदारों नवाजा। अपने जमाने में खलनायक हूं मैं सबसे खूंखार खलनायक रहे परंतु क्या होगा जब आपको पता चले कि यह कलाकार भी अपने अंतिम समय में अंधा हो गया था। आंखों के कारण है फिल्मों में सफलता मिलेगी उन्होंने उनका साथ छोड़ दिया दुर्भाग्यपूर्ण बात यह भी है कि वह बहुत ही रहीस इंसान थे उन्हें अपनी संपत्ति का कोई फायदा नहीं मिला। एक छोटे से मकान में उन्होंने अपनी आखिरी सांस ली थे दिन भर वाइट चेयर पर बैठे रहते थे।



ड्रीम गर्ल–2 में आयुष्मान खुराना का नया लुक

शापित गांव जहां सिर्फ तीन फीट के लोग

क्या आपने कभी किसी ऐसे गांव के बारे में सुना है जिसे ये शाप मिला हो कि वहां किसी भी बच्चे की लंबाई तीन फीट से ज्यादा नहीं होगी। यह अनोखा गांव चीन में है। कहते हैं कि इस गांव को शाप मिला है कि यहां किसी की भी लंबाई तीन फीट से ज्यादा नहीं होगी। सबसे अनोखी बात की इन लोगों की लंबाई सिर्फ सात साल तक ही बढती है, इसके बाद बच्चों की लंबाई बढनी बंद हो जाती है।

चीन में ये गांव शिचुआन प्रांत में स्थित है। इस गांव का नाम है यांग्सी। यांग्सी को लेकर कहा जाता है कि इस गांव में पैदा होने वाले बच्चों की लंबाई बचपन में तो बढ़ती है लेकिन, सात साल की उम्र के बाद ये बढ़ना रुक जाती है। सबसे बड़ी बात की ये लंबाई भी सिर्फ तीन फीट तक ही बढ़ती है। यही वजह है कि इस गांव को आज लोग बौनों का गांव कहते हैं। कुछ लोग तो इस गांव को शापित भी मानते हैं। इस गांव की चर्चा जब हर तरफ़ होने लगी तो कुछ वैज्ञानिकों ने यहां के लोगों पर रिसर्च करना चाहा और कोशिश की वो ये पता लगा सकें कि आखिर इसके पीछे की मुख्य वजह क्या है। हालांकि, इसमें कोई खास कामयाबी हासिल नहीं हुई। कहा जाता है कि जब इस गांव में बच्चे पैदा होते हैं तो तीन से पांच साल तक उम्र तक उनका शरीर सामान्य रहता है।



देश की सभी छावनियों का स्वरूप बदला जाना

छावनियां अंग्रेजों की देन हैं। देश में 62 छावनियां हैं। आजादी के समय 56 छावनियां थीं, और 1947 के बाद छह और छावनियां अधिसूचित की गईं। इस क्रम में 1962 में अजमेर अंतिम 62वीं छावनी बनी। पहली छावनी बंगाल के बैरेकपुर 1765 में हुगली नदी के किनारे बसाई गई।



देश की छावनियों का स्वरूप आने वाले समय में सिरे से बदल जाने वाला है। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले स्थित योल छावनी से यह शुरुआत हो चुकी है। योल छावनी को अब सैन्य अड्डे और असैन्य इलाके में बांटा जाएगा। असैन्य इलाके का स्थानीय नगर पालिका में विलय कर दिया जाएगा। रक्षा मंत्रालय द्वारा इस बाबत जारी अधिसूचना के बाद हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल ने छावनी बोर्ड योल के सिविल एरिया को धर्मशाला विकास खंड की पंचायतों में विलीन करने का आदेश दिया है। देश की सभी छावनियों का स्वरूप इसी प्रकार बदला जाना है। छावनी क्षेत्र के लिए बजट रक्षा मंत्रालय के रक्षा संपदा विभाग से आता है। बजट का एक हिस्सा असैन्य इलाकों पर खर्च होने से सैन्य इलाके को लगता है कि उसे जरूरत के मुताबिक बजट नहीं मिल पाता।

सैन्य और असैन्य इलाकों के बीच बुनियादी सुविधाओं को लेकर भी खींचतान जैसी स्थिति रहती है। इसलिए नागरिक इलाकों को छावनी क्षेत्र से अलग करने की मांग लंबे समय से की जा रही थी। 2019 में हिमाचल प्रदेश के छावनी क्षेत्र के लोगों ने सेना के दबाव से मुक्त करने की मांग करते हुए जोरदार आंदोलन भी चलाया था। उनका कहना था कि अपने मकानों में मरम्मत तक के लिए सैन्य अधिकारियों से मंजूरी लेनी होती है। पानी की आपूर्ति में जब– तब बाधित कर दी जाती है। गौरतलब है कि छावनियां औपनिवेशिक संरचनाएं हैं। योल कस्बे की स्थापना 1849 में हुई थी और यंग ऑफिसर्स लिविंग का संक्षिप्तीकरण है योल। पहले विश्व युद्ध के बाद यहां युद्धबंदियों को रखा जाता था। अलबत्ता, योल छावनी की विधिवत स्थापना 1942 में हुई थी। अब छावनी क्षेत्रों को स्थायी रूप से सैन्य और नागरिक क्षेत्रों में बांटे जाने के फैसले की शुरुआत योल छावनी से कर दी गई है।

किसी छावनी क्षेत्र से आप गुजर रहे हों तो यह नहीं बता सकते कि वह कौन से शहर की छावनी है। सभी में गजब की एकरूपता है। पूरे दिन पीटी, परेड, क्लब कल्चर, खिलाड़ियों के मैदानों में जुटान आदि हर कैंट में दिखलाई पड़ता है। देश के हर प्रांत–क्षेत्र के लोग छावनी में रहते हैं। तमाम छावनियों का भूगोल एक जैसा होता है। हरियाली से ढंका। सुरक्षा का आलम यह कि छोटे बच्चे भी आसपास के बाज़ार और स्कूलों के मैदान में दिन के किसी भी पहर चहलकदमी कर आते हैं। पेड़ों पर चढ़कर उछल–कूद मचाने, 'चोर–सिपाही' खेल खेलने, रास्ते में कहीं भी मिल जाने वाले पेड़ या झाड़ से आम या बेर तोड़ लेने जैसे नजारे यहां आम होते हैं। गुलाब की सोंधी सी खुशबू चहुंओर बिखरी रहती है। लोगों में सामाजिकता भी गजब की होती है। एक दूसरे की चिंता करने वाली। छावनियां अंग्रेजों की देन हैं। देश में 62 छावनियां हैं। आजादी के समय 56 छावनियां थीं, और 1947 के बाद छह और छावनियां अधिसूचित की गईं। इस क्रम में 1962 में अजमेर अंतिम 62वीं छावनी बनी। पहली छावनी बंगाल के बैरेकपुर 1765 में हुगली नदी के किनारे बसाई गई। इसे फ्रेंच के ि खलाफ सतर्क रहने के मद्देनजर बसाया गया था। दरअसल, फ्रेंच ने हुगली नदी के दूसरी तरफ चंद्रनागोर (अब चंदननगर) को जीत कर वहां अपने सैनिकों को जमावड़ा कर लिया था। उसके जवाब में अंग्रेजों ने हुगली नदी के दूसरी तरफ छावनी आबाद की। बाद के समय में उन्होंने आगरा, रानी खेत, कसौली में अपने कब्जे में आए क्षेत्रों में छावनियां बसानी शुरू कर दीं। ब्रिटिश. काल में छावनियों का अपना अलग रुतबा था। ब्रिटिशराज समाप्त होने के बाद भी छावनियां बनी रहीं। यहां सैनिकों के फैमिली क्वॉटर लाइन और बैरकें होती हैं। व्यवस्थित और उम्दा बाजार, स्कूल, स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ। वार्डों में बंटे छावनी क्षेत्र से निर्वाचित वार्ड सदस्य छावनी क्षेत्र संबंधी फैसले लेते हैं, लेकिन बोर्ड का प्रशासक सैनिक अधिकारी होता है। हाल के समय में रास्तों और सड़कों पर चलने के अधिकार को लेकर मसला उभरा। आतं. कवाद के बाद से सैन्य क्षेत्रों की कुछ सड़कों पर आम आवाजाही प्रतिबंधित करने से नागरिक आबादी को परेशानी हुई। हालांकि 2018 में सरकार ने छावनी क्षेत्रों की सड़कों को सार्वजनिक उपयोग के लिए खोल दिया था। सैन्य क्षेत्र में रहने वाले पूर्व सैनिक अफसर चाहते हैं कि सड़कों को आम लोगों के लिए न खोला जाए क्योंकि इससे सुरक्षा को खतरा पैदा हो जाएगा। पिछले वर्ष सिकंदराबाद छावनी में सेना ने एक सड़क पर आम आवाजाही रोकी गई थी।

सड़क का इस्तेमाल करने वाले साढ़े तीन लाख से ज्यादा सिविलियंस को वैकल्पिक मार्ग का इस्तेमाल करना पड़ा और सड़कों पर भीड़भाड़ और अफरातफरी फैल गई। लोगों ने इस रोक के विरोध में कैंडल मार्च निकाला। इस मांग के साथ कि ब्लॉक की गई सड़क को जनता के लिए खोला जाए।

होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा



जैसे बोयेगा वैसे ही
फल तू पायेगा
जरुरत पर कोई साथ नहीं आयेगा
ये जग की रीत समझ नहीं आयेगा
होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा
मानव तन तो मिट्टी का ही मकान है
पल–पल बदलती इसकी पहचान है
मानवता नहीं तो स्वयं तू पछतायेगा
होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा
जान है तो सब रिश्तों का काफिला है
जाने के बाद यहाँ किसे क्या मिला है
अपनी ही करनी का फल तू पायेगा
होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा
जीवन पथ मे जरा संभलकर के चले
इंसानियत से गुलशन को सींचते चले
भवसागर से तू सहज ही तर जायेगा
होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा
आओ जीवन को प्रतिपल जीवंत करें
निज तेज से स्वयं को अब तो संत करें
ऐसे जीने से जीवन सफल हो जायेगा
होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा

प्रमेशदीप मानिकपुरी
आमाचानी धमतरी छ.ग.

प्रिय पाठकों,

इस अंक में प्रकाशित सभी अग्रलेख, कथा–लघु कथा, कविता, व्यंग्य, विचार विमर्श लेखकों एवं विचारकों की अपनी कल्पना प्रसूति हैं। त्रुटियां मानवीय स्वभाव का अंग हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना एक जागरूक पाठक की विशेषता होती है।

अतः आप सभी सुधी विज्ञजनों, से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि आप अपने पत्रों के माध्यम से इस अंक में प्रकाशित त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट भी समय–समय पर कराते रहें ताकि उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

विवाद की स्थिति में न्यायालय, गोरखपुर का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

–व्यवस्थापक

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकजधर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस, निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित। सम्पादक–पंकज धर द्विवेदी सम्पर्क सूत्र– e-mail- ghoonghatkibagawat37@gmail.com